सैन्य सन्देश
Sainya Sandesh

युगाब्द 5126 | चैत्र–2081 | अप्रैल, 24

मोयरंग दिवस 14 अप्रैल

हैप्पी होली

अखिल भारतीय पूर्व-सैनिक सेवा परिषद् का मुखपत्र

लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

कानपुर (उत्तर प्रदेश)

नगरोटा (जम्मू)

हरदोई (उत्तर प्रदेश)

जयपुर (राजस्थाना)

गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)

कुशीनगर (उत्तर प्रदेश)

RNI Reg No.UPBIL/2002/9228

27. December 2023 Postal Reg. SSP/LW/NewsPaper-01-2024-2026
Despatched from- Lko RMS Non TD.
Dates of Despatch- 5,22 & 28

लखीमपुर खीरी (उत्तर प्रदेश)

इंदौर (मध्य प्रदेश)

अयोध्या (उत्तर प्रदेश)

कोटद्वार (उत्तराखण्ड)

ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

देवरिया (उत्तर प्रदेश)

अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद

के सदस्य बनें और राष्ट्र की प्रगति में अपना योगदान दें

मो. : 8317082620, 8004402890
Website: www.sainyasandesh.co.in
E-mail : sainyasandesh@gmail.com, info@sainyasandesh.co.in

सेवा में

अ.भा. पूर्व सैनिक सेवा परिषद् के लिए अतिथि मुद्रक एवं प्रकाशक कर्नल लक्ष्मीकांत तिवारी ने हिन्दुस्तान समाचार फीचर सेवा, हजरतगंज, लखनऊ से मुद्रित कराकर, 3 नीवन मार्केट, बी.एन.रोड, कैसरबाग, लखनऊ से प्रकाशित किया।

सैन्य-सन्देश (मासिक)

राष्ट्रहित, समाजहित, सैनिक-हित को समर्पित पत्रिका

अखिल भारतीय पूर्व-सैनिक सेवा परिषद का मुख-पत्र

वर्ष–25 | चैत्र–2081 | अप्रैल, 2024

संरक्षक मण्डल
ले.ज.वी.के.चतुर्वेदी PVSM, AVSM,SM
ए.वी.एम. एच.पी. सिंह, VrC, VSM

प्रबन्धक मण्डल
ब्रिगेडियर डी एस त्रिपाठी
ब्रिगेडियर गोविन्दजी मिश्र VSM,PPM

सम्पादकीय सलाहकार
ले.जन. दुष्यन्त सिंह PVSM,A VSM

मुख्य सम्पादक
कर्नल लक्ष्मीकान्त तिवारी

सह–सम्पादक
सू.मे. जे.बी.एस. चौहान

प्रबन्धन विपणन एवं प्रचार–प्रसार
सू.मे. बी.एल. वर्मा
सू.मे. ए.के. दुबे
सीपीओ घनश्याम प्रसाद केसरी
सीपीओ डीडी पाण्डेय
(सभी पद अवैतनिक)

मुद्रित :
हिन्दुस्तान समाचार फीचर सेवा लि0

प्रस्तुति

हिन्दी अनुभाग

1. संपादक की कलम से ''मुझे गर्व है मेरे भारत पर'' 2–3
2. 'गौरव गाथा' कैप्टन विक्रम बत्रा 4–7
3. सीएए के बाद एनआरसी भी चाहिए 8–9
4. भारत एक भौगोलिक इकाई है 10–11
5. टारगेट किलिंग राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए जरूरी 12–13
6. स्वराज्य को सुराज्य में बदलने का अवसर 14–15
7. रामराज्य का तात्पर्य 16–17
8. होलिकोत्सव मनाने के वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक कारण 18–20
9. सेवा निवृत्त व्यक्ति बनाम फ्यूज बल्ब.... 21
10. गीता स्कंद 'षोडश अध्याय' 22

English Section

1. India's Security Approach 23-25
2. India - China Bilateral Relations 26-30
3. Nari Shakti all set to take centre..... 31-33
4. Welfare 34
5. गतिविधियाँ (Social Activities) 35-36

सम्पादकीय कार्यालय : 3, नवीन मार्केट, बी.एन. रोड, कैसरबाग, लखनऊ–226001
मो. : 8004402890, 8317082620, 9651217002
Website: www .sainyasandesh.co.in
E-mail : sainyasandesh@gmail.com

The Publishers and Authors reserve the rights in regard to the contents of 'Sainya Sandesh'. The images and certain content used herein are from public domain, belongs to their respective owners and the same is being used herein for awareness and educational purposes only. The Magazine is non commercial, non profitable and intended to create awareness amongst soldiers community.

मुझे गर्व है मेरे भारत पर

जिस देश में हमने जन्म लिया है, जिसका अन्न–जल हमारे शरीर को पोषित कर रहा है, जिस की वायु हमारे शरीर में प्राण वायु बन कर संचरित हो रही है। उससे प्यार करना स्वाभाविक है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने देश–प्रेम को साहचर्यगत प्रेम कहा है। लम्बे समय तक किसी स्थान पर रहने के कारण जिस स्थान से प्यार होना स्वाभाविक है। मुझे भारत से प्यार है, अपने भारतीय होने पर गर्व है। इस गर्व का कारण मात्र यहीं नहीं है कि मैं यहां पैदा हुआ हूं। इस गर्व का कारण अत्यधिक गहरा है। यह मेरा सौभाग्य है कि भारत में पैदा हुआ। भारत महान् परमाराओं का देश है। एक समय था जबकि इसे विश्व गुरु माना जाता था और ज्ञान–पिपासु अपनी प्यास बझाने के लिए भारत की ओर खिचे चले आते थे। नालन्दा विक्रमशिला एवं तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालय शिक्षा के उच्चतम स्तरों को छूते थे। विशालकाय पुस्तकालयों में पुस्तकों का अक्षय भण्डार था। सृष्टि के उषाकाल में इस पावन धरती पर वेदों की ऋचाएं लिखी गई और जन–कल्याणकारी यज्ञों का सुगन्धित धुँवा वातावरण में फैला। वैदिक ऋषियों ने जिस वैश्विक दृष्टि का परिचय दिया ओर मानव धर्म का प्रचार किया वह अभुतपूर्व था।

धार्मिक परंपरा

मुझे भारतीय होने पर गर्व है क्योंकि आध्यात्मिक क्षेत्र में इस देश ने उच्चतम उपलब्धियां प्राप्त की। आत्मा और परमात्मा के सम्बन्धों पर यहां गहराई से विचार किया गया। छः दर्शनों की समृद्ध परम्परा इस देश में विकसित हुई। जपियों– तपियों की इस भूमि पर दधीचि जैसे ऋषि ने देवकार्य के लिए अपनी हड़ियों तक दान कर दी। शरणागत की रक्षा के लिए यहीं पर शिवि ने अपने शरीर का मांस बाज को खिला दिया। स्वप्न में दिए गए दान को स्वीकारने वाले राजा हरिश्चन्द्र वाराणसी के बाजार में सपरिवार बिक गए। इस देश में पिता की आज्ञा से राजपाट छोड़ कर चौदह वर्षों तक वनों में भटकने वाले राम ने जन्म लिया। इस देश में प्रह्लाद ने भक्ति का आदर्श स्थापित किया, ध्रव ने बचपन में घोर तपस्या की। यहीं पर भागीरथ गंगा को पृथ्वी पर लाने के लिये तपस्या करता रहा। इसी धरती पर शंकराचार्य की धर्म– विजय ने आकार धारण किया और यहीं पर बुद्ध और महावीर की वाणी गुजी। इसी पावन धरती पर सिक्ख गुरुओं के धर्मोपदेश गूंजी और यहीं पर सन्तों की वाणी का प्रचार हुआ।

भौतिक उपलब्धियां

भौतिक क्षेत्र में भी भारत की उपलब्धियां कम महत्त्वपूर्ण नहीं रही हैं। महाभारत और रामायण कालीन सभ्यता समृद्ध सभ्यता थी। महाभारत में माया द्वारा निमित हस्तिनापुर का सौन्दर्य अद्भुत था। महाभारत में प्रयुक्त शस्त्रास्त्र भौतिक उन्नति के सूचक हैं। रामायण में पुष्पक विमान तक का वर्णन आया है। हमारे यहां विमान कला का विकास हुआ था। इसके प्रमाण उपलब्ध हैं। सदूर अतीत में जिस वृहत्तर भारत की स्थापना की गई थी। उसका आधार सांस्कृतिक विजय थी। भारत के व्यापारिक पोत भारत में बना माल लेकर विश्व के 84 देशों की बन्दरगाहों पर पहुंचते थे। भारत से रेशम, हीरे–जवाहरात ही नहीं, अन्य

विलासिता की सामग्री भी निर्यात को जाती थी।

वैज्ञानिक उन्नति

स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात भारत ने विज्ञान के क्षेत्र में अधिक उन्नति की है। देश के इंजीनियर तथा वैज्ञानिक विश्व में श्रेष्ठ माने जाते हैं। जिस देश में पराधीनता के युग में सूई तक नहीं बनती थी वहीं पर वायूयान, सबमरीन, कम्प्यूटर तथा अन्तरिक्ष को भेदने वाले राकेट और उपग्रह निर्मित हो रहे हैं। यहाँ पर परमाणु संयत्रों से प्राप्त परमाणु ऊर्जा को राष्ट्र निर्माण में लगाया जा रहा है। विशालकाय इस्पात के कारखान और विशाल बांध इत्यादि भारत की वैज्ञानिक उन्नति के प्रतीक हैं।

धर्म निरपेक्षता

मुझे गर्व है कि में भारतीय हूं क्योंकि विश्व का यह एकमात्र देश है जहां पर सर्व धर्म समभाव का आदर्श विकसित हुआ और प्रत्येक धर्म को वहां शरण मिली। धर्म निरपेक्षता को भारत ने अपना कर अपनी प्राचीन परम्परा को ही पुष्ट किया है। भारत की प्रजातन्त्रीय शासन व्यवस्था विश्व में सबसे बड़ी है। हजारों वर्ष पूर्व यहाँ पर प्रान्तका जन्म हुआ था। गांवों में पंचायत प्रणाली प्राचीन और पूरी तरह प्रजातान्तिक हैं।

मुझे भारतीय कहलाने में गर्व का अनुभव होता है क्योंकि भारत एक भूमि का टुकड़ा नहीं, एक समृध एवं प्राचीन विरासत का नाम है। भारत में ऊपरी तौर पर भले ही विभिन्नता दिखाई देती हो परन्तु एकता भारतीय संस्कृति की धारा हम सबको बांधे हुए है। भारत की समस्याएं अनेक हैं परन्तु भारत में जन पर विजय पाने की क्षमता है। भारत आज एक सम्बल देश है जिस पर सारे विश्व की नजरें लगी है। विश्व शान्ति में गुटनिरपेक्ष आंदोलन को जन्म हमने ही दिया और पंचशील का सिद्धान्त यहीं पर जन्मा।

भारतीय समाज की अनेक बुराइयों से भी मै परिचित हूं। भारत के सम्मुख खड़ा चुनौतियों का भी मुझे ज्ञान है। भारत संक्रमण काल से गुजर चुका है। भारत का भविष्य उज्ज्वल है। भारत का अतीत गौरवपूर्ण था। भारत का वर्तमान संघर्षपूर्ण है। मुझे भारतीय होने पर गर्व है।

मुझे गर्व हे कि में उस धर्म से हूं जिसने दुनिया को सहिष्णुता और सार्वभौमिक स्वीकृति का पाठ पढ़ाया है हम सिर्फ सार्वभौमिक सहिष्णुता पर ही विश्वास नहीं करते बल्कि, हम राभी धर्मा को सच के रूप में स्वीकार करते हैं।

मुझे गर्व है कि मैं उस देश से हूं जिसने सभी धर्मा और सभी देशों के सताए गए लोगों को अपने यहां शरण दी। मुझे गर्व है कि हमने अपने दिल में इसराइल की वो पवित्र यादें संजा रखी हैं जिनमें उनमे धर्मस्थलों को रोमन हमलावरों ने तहस–नहस कर दिया था और फिर उन्होंने दक्षिण भारत में शरण ली थी।

जय हिन्द

कर्नल लक्ष्मी कान्त तिवारी
मुख्य संपादक

हमारा तिरंगा इसलिए नहीं फहरता है कि हवा चल रही होती है, बल्कि हमारा तिरंगा उस जवान की आखिरी सांस से फहरता है, जो हमारे तिरंगे की रक्षा के लिए अपने प्राणों को यूंही न्योछावर कर देता है!

Our tricolor does not fly because the wind is moving, but our tricolor flutters with the last breath of the young man who sacrificed his life to protect our tricolor!

कैप्टन विक्रम बत्रा

(१३ जम्मू व कश्मीर राइफल्स)

पॉईट ५१४० तथा पॉईट ४८७५ चोटियों पर कब्जा करने के लिए हुई लड़ाइयों

१२ जून, १६६६ को १३ जम्मू व कश्मीर राइफल्स को आदेश मिला कि वह दास की और बड़े और १८ ग्रेनेडियर्स के रिजर्व के रूप में काम करे, जिसके जिम्मे तोलोलिंग पर्वत श्रृंखला की एक चोटी हेप पर कब्जा करना था। १७ जून, १६६६ को इस हंप तथा रॉकी नॉब नामक पहाड़ियों पर दो रातों की भीषण लड़ाई के बाद कब्जा हो पाया था। दुश्मन के आठ सैनिक मारे गए थे और नौ घायल हुए थे। तीन यूनिवर्सल मशीनगनें तथा बड़ी मात्रा में गोला–बारूद मिला, जिसे फिर पाकिस्तानी सेना के खिलाफ ही इस्तेमाल किया गया।

जम्मू–कश्मीर राइफल्स को अगला दायित्व दिया गया। इस बार उसे पइिंट ५१४० पर कब्जा करना था। यह द्रास घाटी का सबसे महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। यहाँ से दुश्मन ने स्ट्रिंगर मिसाइल से हमारा एक हेलीकॉप्टर गिरा दिया था। इसके बाद इस क्षेत्र के आस–पास कोई हेलीकॉप्टर नहीं जा पाया था। इस कारण इसपर कब्जे का महत्त्व बहुत ज्यादा था।

पॉइंट ५१४० पर कब्जे का दायित्व १३ जम्मू व कश्मीर राइफल्स की श्बीश व श्डीश कंपनी को दिया गया था। श्बीश कंपनी का नेतृत्व कैप्टन एस. एस. जामवाला तथा श्डीश कंपनी का नेतृत्व कैप्टन विक्रम बत्रा कर रहे थे। ये कंपनियाँ १६ जून, १६६६ को प्रातः पाँच बजे तोलोलिंग पहाड़ी की चोटी पर पहुँच गई तथा साढ़े छह बजे तक हंप के पश्चिमी किनारे पर मोरचा जमा लिया।

दिन के दौरान दोनों कंपनी कमांडरों ने अपने कमांडिंग अधिकारी लेफ्टिनेंट कर्नल वाई. के. जोशी के साथ चर्चा की और पूरे इलाके के बारे में गहन विचार किया। इस बातचीत में कैप्टन विक्रम बत्रा ने अपने कमांडिंग अधिकारी को बताया कि उनकी सफलता का संकेत होगा, 'ये दिल माँगे मीर' उधर कैप्टन एस. एस. जामवाल ने अपना संकेत चुना, ओह, यह, यह, यह। इधर भारतीय तोपों ने आग उगलना प्रारंभ किया और उधर भारतीय इन्फैंट्री के जवान पर चढ़ने लगे। १५,००० फीट की ऊँचाईवाली यह चोटी (पॉइंट ५१४०) काफी खरा खतरनाक है और इसपर चढ़ना उतना हो कठिन। भारतीय सैनिकों की साँस लेने के लिए बार–बार रुकना पड़ता था। उधर दुश्मन नजर रखने के लिए तोपों में गोले छोड़ता रहता था। इससे भारतीय कंपनियों की गति और कमजोर हो रही थी। बीच–बीच में दुश्मन की गोलाबारी से भारतीय सैनिक हताहस भी हो रहे थे. पर भारतीय कंपनियों इन सबके बावजूद आगे बढ़ती रहीं। तीन बजकर पंद्रह मिनट पर अंधेरे में पास में पहुँच गए। इस जगह पर सात बंकर थे– दो बंकर ऊपर और पाँच पूर्व की और। कैप्टन एस. एस. जामवाल के नेतृत्व में 'बी' कंपनी पहले ऊपर पहुँथी। उसने बाएँ से आक्रमण किया। इससे ठीक पहले दुश्मन ने पॉइंट ५१४० में जम्मू व कश्मीर राइफल्स को रेडियो संदेश भेजा और उन्हें हतोत्साहित करने के लिए कहा कि

उनका एक भी आदमी जिंदा बचकर नहीं जा पाएगा। पर विक्रम और उनके साथियों ने भी मुँहतोड़ उत्तर दिया और इस मनोवैज्ञानिक युद्ध में पाकिस्तानियों की हार हो गई।

कैप्टन जामवाल की कंपनी ने जब अपना लक्ष्य हासिल कर लिया तो तीन बजकर पैंतीस मिनट पर ओह, यह, यह, यह। का संगीत रेडियो पर भेजा। उध्‍र पूर्वी बंकरों पर कैप्टन बत्रा की कंपनी ने तीन रकिट दागे और फिर उनके नेतृत्व में जवान आगे बढ़ने लगे। छह पाकिस्तानी सिपाही मारे गए और शेष भाग गए। चार बजकर पैंतीस मिनट पर कैप्टन विक्रम बत्रा का संदेश रेडियो पर आया– श्ये दिल माँगे मोरश। वहाँ बहुत बड़ी मात्रा में हथियार और गोला–बारूद मिला। इससे मालूम होता है कि पॉइंट ५१४० पर लगभग एक पूरी प्लाटून तैनात थी।

पॉइंट ५१४० पर कब्जे ने द्रास क्षेत्र में युद्ध की दिशा ही बदल दी। इस काररवाई से दुश्मन बुरी तरह दहल गया। वह अचंभे में भी था और सैनिकों की बहादुरी तथा नेतृत्व की कामयाबी से प्रभावित भी। पॉइंट ५१४० पर कब्जे के पश्चात् हेलीकॉप्टर तोलोलिंग पहाड़ी पर उत्तरने लगे। २६ जून, १६६६ को जम्मू व कश्मीर राइफल्स को फिर से मुश्कोह घाटी में उतारा गया।

पॉइंट ४८७५ पर कब्जा

पॉइंट ४८७५ सामरिक महत्त्व का स्थान है। यह मुश्कोह घाटी में स्थित है तथा राष्ट्रीय राजमार्ग १ ए द्रास से मातायन का एक हिस्सा है। इस जगह से तीस– चालीस किलोमीटर का इलाका साफ दिखाई दे जाता है। यहाँ से सेना सटीक गोलाबारी कर सकती है। भारतीय सेना के लिए यह आवश्यक था कि इस जगह को पाकिस्तानियों से खाली कराए। यहाँ का हेलीपैड दुश्मन के निशाने पर था और हेलीकॉप्टरों को काफी निचाई पर उड़ना पड़ता था। पास में ही पांड्रास रिज है। १३ जम्मू व कश्मीर राइफल्स को पॉइंट ४८७५ पर कब्जे का आदेश दे दिया गया और पिछले हमले के बाद मिलनेवाले उनके आराम में कटौती कर दी गई। ३० जून, १६६६ को उन्हें मुश्कोह घाटी में प्रवेश कराया गया और पॉइंट ४८७५ पर कब्जे के लिए ७६ माउंटेन ब्रिगेड की कमान में रखा गया। यह सारा काम घुप्प अँधेरे में किया गया, क्योंकि पॉइंट ४८७५ पर मौजूद दुश्मन उन्हें देख सकता था। कमांडिंग अधिकारी लेफ्टिनेंट कर्नल वाई. के. जोशी तथा ए कंपनी के कमांडर मेजर एस.वी. भास्कर १ जुलाई, १६६६ को पास के एक पॉइंट पर चढ़ गए। उन्होंने प्रारंभिक देख–रेख करके योजना का प्रारूप तैयार किया। २ जुलाई, १६६६ को ७६ माउंटेन ब्रिगेड के मुख्यालय में इस महत्त्वपूर्ण डिवीजन के कमांडर मेजर जनरल मोहिंदर पुरी, ७६ माउंटेन डिवीजन के ब्रिगेडियर कक्कड़, १३ जम्मू व कश्मीर राइफल्स के लेफ्टिनेंट कर्नल वाई. के. जोशी ने भाग लिया।

पॉइंट ४८७५ से लगभग १,५०० मीटर दूर बटालियन तैनात की गई। भारी हथियार, गोला–बारूद आदि दो दिनों में बटालियन से और २८ राष्ट्रीय राइफल्स से लाकर २–३ जुलाई, १६६६ तक जमा कर लिये गए।

४ जुलाई, १६६६ को दिन में ए तथा सी कंपनियों के कमांडरों मेजर एस.वी. भास्कर तथा मेजर गुरप्रीत सिंह ने योजना को अंतिम रूप दिया और ओ समूह को लक्ष्य दिखा दिया। ४ जुलाई, १६६६ को शाम को छह बजे बोफोर्स तोपों और मल्टी बैरेल लांचरों से गोलाबारी प्रारंभ हुई। भारतीय सैन्य कंपनियों ने रात साढ़े आठ बजे आगे बढ़ना प्रारंभ किया। रात का घुप्प अँधेरा था और जमीन पथरीली थी। आगे बढ़ना बहुत कठिन काम था, पर जब कंपनियाँ लक्ष्य में २०० मीटर की दूरी पर पहुंचीं तो दुश्मन ने भारी गोलाबारी शुरू कर दी। भारतीय कंपनियों ने भी प्रातः साढ़े चार बजे अपने स्वचालित हथियारों से गोलाबारी प्रारंभ की और चोटी पर स्थित मोरचाबंदी को बहाना शुरू कर दिया। पॉइंट ४८७५ से जब दुश्मन की गोलाबारी तेज हुई तो भारतीय कंपनियों को अपने कदम रोकने पड़े। इसके अलावा सवेरा भी होने वाला था।

दुश्मन ने अब भारतीय कंपनियों पर छोटे हथियारों से हमला किया। रास्ते सँकरे होने के कारण भारतीय सैनिकों का आगे बढ़ना रुक गया। ५ जुलाई को प्रातः सवा दस बजे 'सी' कंपनी के कमांडर ने अपनी स्थिति बताई और उस स्थान के बारे में भी बताया, जहाँ से तेज गोलाबारी हो रही थी। कमान अधिकारी लेफ्टिनेंट कर्नल जोशी ने खुद दो फेगोट मिसाइलें दागीं और रास्ता रोक रहे दुश्मन को शांत कर दिया। ये मिसाइलें सटीक निशाने पर लगीं और दुश्मन बंकर छोड़कर भागता हुआ नजर आया। श्सीश कंपनी की कमान ने अपनी दो टुकड़ी के साथ तेजी से आक्रमण किया और ५ जुलाई, १६६६ को एक बजे दोपहर तक पॉइंट ४८७५ पर भारतीय सेना का कब्जा हो गया। 'ए' और 'सी' कंपनियाँ अब आपस में मिल गई। उन्होंने उस पर्वत चोटी को मजबूती से अपने अधि ाकार में कर लियाय पर दुश्मन अभी भी नीचे की एक पर्वत चोटी से हमले कर रहा था।

५ जुलाई, १६६६ को रात दस बजे पाकिस्तानियों ने पॉइंट ४८७५ के उत्तर से दोनों भारतीय कंपनियों पर भारी गोलाबारी शुरू कर दी। अगले दिन (६ जुलाई, १६६६ को) प्रातः चार बजकर पैंतालीस मिनट पर 'सी' कंपनी ने खबर दी कि भारी गोलाबारी के कारण उसका गोला–बारूद समाप्त हो रहा है। श्बीश कंपनी, जो रिजर्व में थी, तुरंत अपना गोला–बारूद वहाँ ले आई, तब दोनों पक्षों के बीच गोलाबारी जारी रही।

६–७ जुलाई, १६६६ की रात को लड़ते हुए दोनों पक्ष इतने नजदीक आ चुके थे कि दोनों में वाक्युद्ध भी साथ–साथ चलता रहा। यह भी स्पष्ट हो गया कि इस पाकिस्तानी चौकी को नष्ट करना जरूरी है, अन्यथा स्थिति बिगड़ सकती है। इस हालत में दुश्मन की स्थिति का पता लगा कि वह पॉइंट ४८७५ के उत्तर में पतली और लंबी घाटी में भौजूद है। साथ ही यह भी पता चला कि उसके पास दो मजबूत सेंगर भी हैं। 'डी' कंपनी को जिम्मेदारी दी गई कि वह इन पाकिस्तानी घुसपैठियों को खदेड़े, पर ७ जुलाई, १६६६ को इस कंपनी की बढ़त रुक गई, क्योंकि गैंगर पास ही थे। अब कैप्टन बत्रा ने अपनी सेवाएँ प्रस्तुत कीं और एक टुकड़ी के साथ आगे बढ़ कर पूरे क्षेत्र की निगरानी करके दुश्मन की स्थिति का आकलन किया। उधर दुश्मन तेजी से स्वचालित हथियारों से गोलाबारी कर रहा था और लांचरों से ग्रेनेड भी फेंक रहा था, इधर कैप्टन विक्रम बत्रा ने तेजी से आगे बढ़कर अपनी ए के–४७ से सैंगर बंद कर दिया। उन्होंने पतले रास्ते से अंदर घुसकर पाँच पाकिस्तानी सैनिकों को मार गिराया, पर बाकी सैनिकों ने उन्हें सामने से छाती में गोली मारी। उन्हें ग्रेनेड का एक टुकड़ा भी लगा।

कैप्टन विक्रम बत्रा ने अपने जीवन का बलिदान

कर दिया, पर उससे पहले उन्होंने अपनी बटालियन का आगे बढ़ने का रास्ता साफ कर दिया और अंततः बटालियन पॉइंट ४८७५ पर कब्जा करके द्रास से मातायन तक के राष्ट्रीय राजमार्ग पर से दुश्मन का दखल समाप्त कर दिया।

कैप्टन विक्रम बत्रा लगातार सीधे आगे बढ़ते रहे। उन्हें अपने मिशन में आनेवाले खतरे की पूरी जानकारी थी। उन्होंने अद्वितीय हिम्मत व दृढ़ता का प्रदर्शन करते हुए पाकिस्तानी ठिकानों को नष्ट किया, क्योंकि उन्हें मालूम था कि उनकी बटालियन का काम शीघ्र पूरा किया जाना जरूरी था। उनके घातक आक्रमण से दुश्मन दहल गया और पॉइंट ४८७५ पर कब्जा जल्दी ही हो गया। उन्होंने न सिर्फ अपना कर्तव्य पूरा किया, वरन् एक के बाद एक खतरे मोल लेकर भारतीय सेना की उच्च परंपरा को बनाए भी रखा।

प्रशस्ति–पत्र

कैप्टन विक्रम बत्रा

१३ जम्मू व कश्मीर राइफल्स (आई सी–५७५५६)

२० जून, १९९९ को ऑपरेशन विजय के दौरान कैप्टन विक्रम बत्रा कमांडर डेल्टा कंपनी को पॉइंट ५१४० पर कब्जा करने के लिए भेजा गया। कैप्टन बत्रा अपनी कंपनी के साथ पूर्व की ओर चोटी पर किसी तरह घिसटकर पहुँचे और पास पहुँचकर दुश्मन पर अचानक आक्रमण कर दिया। इसके बाद कैप्टन बत्रा ने अपने दल को पुनर्गठित करके अपने जवानों को उत्साहित करते हुए दुश्मन को तबाह परम वीर

चक्र (मरणोपरांत) से सम्मानित कैप्टन विक्रम बत्रा के पिता तत्कालीन राष्ट्रपति महामहिम श्री के. आर. नारायणन से परम वीर चक्र ग्रहण करते हुए।

किया। आमने–सामने की लड़ाई में उन्होंने पाँच जवान मार गिराए। ७ जुलाई, १९९९ को पॉइंट ४८७५ इलाके में हुई दूसरी कारवाई में उनकी कंपनी को एक पतली सँकरी पहाड़ी को खाली कराने की जिम्मेदारी दी गई थी, जिसमें दुश्मन ने जबरदस्त किलेबंदी कर रखी थी। इसमें अंदर जाने का एक ही रास्ता था। पतले रास्ते से होते हुए कैप्टन बत्रा ने दुश्मन पर हमला किया और दुश्मन से आमने–सामने की लड़ाई की। उन्होंने दुश्मन के पाँच सैनिकों को सामने से मार गिराया। हालाँकि उन्हें गंभीर चोटें आई थीं, पर वे घिसटते हुए दुश्मन तक पहुँचे और ग्रेनेड फेंककर दुश्मन के ठिकाने को नष्ट कर दिया। उन्होंने निजी सुरक्षा का बिलकुल खयाल नहीं किया और दुश्मन की भारी गोलाबारी के बीच अपने जवानों को आगे बढ़ाया, जिससे असंभव सा लगनेवाला कार्य संभव हो गया। हालाँकि कैप्टन बत्रा मरणासन्न स्थिति में आ गए थे, पर उनके साहसिक कार्य से प्रेरित होकर उनके सैनिकों ने शेष पाकिस्तानियों को मार गिराया और पॉइंट ४८७५ पर अपना अधिकार कर लिया।

कैप्टन बत्रा ने श्रेष्ठ वीरता और नेतृत्व का कुशल प्रदर्शन दुश्मन के समक्ष किया और भारतीय सेना की उच्चतम परंपराओं को बनाए रखते हुए अपना बलिदान किया।

सीएए के बाद एनआरसी भी चाहिए

कैप्टन आर. विक्रम सिंह
आईएएस (सेनि)

आर. विक्रम सिंह। जो गैर–मुस्लिम 1947 में रेडक्लिफ रेखा के उस पार पाकिस्तान में छूट गए थे, उनका अपराध क्या था? सत्ता अधिग्रहण की जल्दबाजी में भारतीय नेताओं ने जिन्ना की मजहबी सत्ता से उनका सौदा कर लिया। उन्हें राहत पहुंचाने के आवश्यक दायित्व की पूर्ति 75 वर्ष बाद अब नागरिकता संशोधन अधिनियम यानी सीएए के माध्यम से की जा रही है। सीएए के बाद राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर यानी एनआरसी की जरूरत है। इस बीच सीएए को लेकर कुछ अनावश्यक टिप्पणियां की जा रही हैं, जिनका प्रतिकार भी किया जा रहा है। इसी कड़ी में विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने अमेरिकी राजदूत को यह कहकर उचित जवाब दिया, 'आप भारत विभाजन का इतिहास नहीं जानते, लिहाजा सीएए को नहीं समझ सकते। उनके प्रति हमारा ऐतिहासिक दायित्व है, जिनके साथ विभाजन ने अन्याय किया।' 2014 से पहले हमारे स्वयंभू सेक्युलर नेताओं का यह मानना था कि पाकिस्तान को भारत में सांप्रदायिक आतंकवाद का दोषी करार देने का परिणाम वोट बैंक की राजनीति की दृष्टि से बुरा होगा।

राष्ट्रवाद के उभार की संभावना से कभी नेहरू भी परेशान थे, खासकर तब जब तत्कालीन राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद ने सोमनाथ मंदिर के उद्घाटन में शामिल होने का फैसला किया था। इस देश में राष्ट्रीयता के सापेक्ष सांप्रदायिक पक्षधरता का संघर्ष आज से नहीं, बल्कि आजादी के प्रारंभ से ही चल रहा है। याद रहे कि तुर्किये के खलीफा की बहाली का मुद्दा आजादी के आंदोलन की मुहिम के साथ जुड़ा। यह उन शुरुआती कारणों में से एक था, जिनसे भारत विभाजन की भूमिका बनी। गांधी जी द्वारा असहयोग आंदोलन स्थगित करने के बाद यही मोपला जैसे भीषण नरसंहार और तमाम दंगों का कारण बना। विभाजन के बाद भी वोट बैंक की चुनावी बाध्यताओं के कारण इतने वर्षों बाद भी यदि वह समीकरण ज्यों का त्यों है तो उसका कारण है विभाजन का आधा–अधूरा अनुपालन है।

कांग्रेस नेतृत्व अंग्रेजों के साथ तो भारत के सांप्रदायिक विभाजन पर सहमत हो गया, लेकिन जब जमीनी स्तर पर अनुपालन की बारी आई तो उसकी नीति भारत के मुस्लिम समाज को यहीं रोक लेने एवं सीमापार के हिंदुओं को यहां न आने देने की बन गई। यह बात और है कि तब कांग्रेस के नेता दिल्ली के इलाकों में घूम–घूम कर पाकिस्तान जाने वालों को वहां जाने से रोक रहे थे। शायद कांग्रेस

को यह आशंका रही होगी कि भारत यदि हिंदुओं का देश बन गया तो उसकी भावी राजनीति का क्या होगा। इसीलिए नेहरू ने 1950 में हुए नेहरू–लियाकत पैक्ट में आबादी हस्तांतरण में यथास्थिति कायम रखने एवं अपने–अपने अल्पसंख्यकों को सुरक्षा देने के वादे पर हस्ताक्षर किए।

नेहरू जानते थे कि जो देश मजहब के आधार पर ही बना है, उसके लिए तो हिंदू काफिर मजहबी विस्तार के लक्ष्य हैं। वह भला अल्पसंख्यकों को सुरक्षा क्यों देगा? उस समझौते का परिणाम आज हमारे सामने एक भीषण त्रासदी की तरह है। जहां भारत में अल्पसंख्यक आबादी 9 प्रतिशत से बढ़कर आज 15 प्रतिशत के आसपास है, वहीं पाकिस्तान में अल्पसंख्यक हिंदू 23 प्रतिशत से घटकर करीब 2 प्रतिशत रह गए हैं। गृहमंत्री अमित शाह ने इस पर सवाल उठाया कि आखिर कहां गए वे करोड़ों हिंदू? आजादी के 75 वर्षों बाद एक नेता ने यह सवाल तो पूछा। कांग्रेस के पास इन सवालों का कोई जवाब न तब था और न अब है। नेहरू के स्थान पर राष्ट्रवादी चरित्र के किसी नेता के पास उस समय नेतृत्व रहा होता तो संभवतः ऐसी विषम स्थिति निर्मित नहीं हुई होती। तब सिंध के हिंदूबहुल जिलों को लेकर 'स्वायत्त हिंदू एनक्लेव' बनाना हमारा लक्ष्य हो सकता था, लेकिन जब सत्ता वोट बैंक से संचालित हो तो ऐसे लक्ष्य की कल्पना भी नहीं की जा सकती। उन्हें हिंदुओं का दमन स्वीकार्य था, लेकिन उनकी सुरक्षा संरक्षण नहीं।

भारत में अल्पसंख्यकों को चुनावी समीकरण का हिस्सा बनाकर भारतीय राजनीति का प्रारंभिक विमर्श गढ़ा गया। इसीलिए पाकिस्तान, उर्दू, अलीगढ़ स्कूल प्रतिबद्ध इतिहास लेखक भारत के राजनीतिक विमर्श के नियंत्रक बने रहे। के लालच में असम में इतनी बड़ी संख्या में बांग्लादेशी बसाए गए कि वहां जनसांख्यिकी का अनुपात ही बिगड़ लेकिन किसी ने कोई चिंता नहीं सत्ताधारी दल के नेताओं ने समझौता एक्सप्रेस बमकांड एवं मुंबई पर हुए आतंकी हमले के बाद हिंदू–आतंकवाद छद्म परिभाषाएं गढ़ने में बड़ा परिश्रम। दूषित लक्ष्यपूर्ति के लिए उन्होंने कर्नल पुरोहित जैसे सेनाधिकारियों को भी बख्शा।

जब हम सीएए जैसे नागरिकता प्रदान करने वाले कानून का विरोध देखते हैं तब समझ में आता है कि तथाकथित सेक्युलर तत्वों के असल इरादे क्या हैं। हमने अनुच्छेद 370 को हटाने का विरोध भी देखा है। यदि विरोध कश्मीर में हुआ होता तो इसे समझा जा सकता था, लेकिन शेष भारत के अल्पसंख्यकों को अनुच्छेद–370 से इतना लगाव क्यों? उन्हें तो इसका स्वागत करना चाहिए था कि कश्मीर के मुस्लिम भारत के वृहद् मुस्लिम समाज के साथ मजबूती से जुड़ रहे हैं। इस विरोध ने छिपे हुए सांप्रदायिक राजनीतिक विमर्श के निहितार्थ को पूरी तरह उजागर कर दिया। जब कुछ नेता पाकिस्तान से आए हिंदू–सिख शरणार्थियों को कोसते हुए दिखते हैं, तब हमें 1947 के नेहरू की याद आ जाती है।

सीएए तो वह कानून है जो हमें अपने लोगों की चिंता करना और उनके भविष्य को संवारने की ओर उन्मुख करता है। इस कानून की स्वीकृति के साथ स्पष्ट मानस का एक दूसरा ही भारत उभर रहा है, जिसे हम जाति, संप्रदाय, वैचारिक विभ्रम के जंगल में वर्षों से खोज रहे थे। सीएए के विरुद्ध दो सौ से अधिक याचिकाएं दायर करने वाले लोग राष्ट्र के धैर्य की परीक्षा ले रहे हैं। यह तय है कि वे एनआरसी की पहल का और अधिक विरोध करेंगे। समझना कठिन है कि वे यह क्यों चाहते हैं कि आजादी के 75 वर्ष बाद भी देश को अपने वैध नागरिकों की सूची बनाने का भी अधिकार नहीं होना चाहिए? सीएए तो एक प्रारंभ है। विलंब से ही सही, लेकिन हमें यह तो जानना चाहिए ही कि आखिर देश में भारतीय नागरिकों की कुल संख्या कितनी है। ध्यान रहे कि असम में एनआरसी बन चुका है और वह सुप्रीम कोर्ट के आदेश से बना है।

भारत एक भौगोलिक इकाई है

हृदयनारायण दीक्षित

डॉ0 बी0आर0 आम्बेडकर वाकई भारत रत्न हैं। प्रख्यात् मनीषी, संविधान सर्जक, व श्रद्धेय राष्ट्रनिर्माता। वे अद्वितीय थे, प्रेरक थे, अमर थे। उन्होंने भारतीय सार्वजनिक जीवन में हस्तक्षेप किया। उनके व्यक्तित्व, कृतित्व और विचार आधुनिक राजनीति को भी लगातार प्रभावित कर रहे हैं। वे अपने जीवनकाल से ज्यादा आधुनिक काल में भी प्रभावी हैं। वर्तमान जैसे विद्यमान श्रीमान है। प्रखर राष्ट्रवादी हैं। डॉ0 आम्बेडकर अपने समकालीन विद्वानों, राजनेताओं के मध्य श्रेष्ठ बुद्धिजीवी थे। राष्ट्रनिष्ठ और बहुपठित थे। वे भारतीय समाज संरचना के तर्कनिष्ठ आलोचक थे। उन्होंने ऋग्वेद सहित सम्पूर्ण प्राचीन भारतीय वाड्.मय पढ़ा। उपनिषद पुराण और स्मृति ग्रन्थ भी उनके प्रिय विषय रहे। उन्होंने प्राचीन इतिहास का गहन अध्ययन किया। शूद्रों को अलग नस्ल बताने वाली नेतागीरी का प्रतिकार किया। मार्क्सवाद पढ़ा और भारतीय परिस्थितियों खासतौर से दलितों के लिए अनुपयोगी बताया। उन्होंने बहुचर्चित 'आर्य आक्रमण के सिद्धांत' का प्रतिकार किया। भारतीय इतिहास बोध के प्रेमी उनके ऋणी रहेंगे।

राजनीति ने 'जाति और शूद्र' को भारतीय इतिहास का प्राचीन तत्व बनाया है। ब्रिटिश विद्वान व जातिवादी राजनीति का एक बड़ा धड़ा आर्यों को विदेशी हमलावर और शूद्रों को पराजित नस्ल बताता रहा है। डॉ0 आम्बेडकर ने लिखा, "यह धारणा गलत है कि आर्य आक्रमणकारियों ने शूद्रों को जीता। पहली बात तो यह कि आर्य भारत में बाहर से आए थे और उन्होंने यहां के मूल निवासियों पर आक्रमण किया, इस कहानी के समर्थन के लिए कोई भी प्रमाण नहीं है। भारत ही आर्यो का मूल निवास स्थान था, यह सिद्ध करने के लिए प्रमाण—सामग्री काफी बड़े परिमाण में है। आर्यो और दस्युओं में युद्ध हुआ, यह साबित करने के लिए कोई प्रमाण नहीं है। फिर दस्युओं का शूद्रों से कुछ लेना—देना नहीं है।" (डॉ0 बाबा साहब आम्बेडकर राइटिंग्स एण्ड स्पीचेज खण्ड 7 पृष्ठ 420) आर्यों को विदेशी मानने का झूठ अभी भी जारी है।

डॉ0 आम्बेडकर की पुस्तक "हू वेयर शूद्राज" (शूद्र कौन थे?) (1946) पठनीय है। उन्होंने एक विद्वान अधिवक्ता की तरह पहले पाश्चात्य विद्वानों के विचार दिये हैं। उन स्थापनाओं को तर्क सहित गलत बताया है। उन्होंने ऐसे विद्वानों की 7 मुख्य स्थापनाएं बनाई – 1. जिन लोगों ने वैदिक साहित्य रचा था, वे आर्य नस्ल के थे। 2. आर्य नस्ल बाहर से आई थी और उसने भारत पर आक्रमण किया था। 3. भारत के निवासी दास और दस्यु रूप में जाने जाते थे और ये आर्यो से नस्ल के विचार से भिन्न थे। 4. आर्य श्वेत नस्ल के थे, दास और दस्यु काली नस्ल के थे। 5. आर्यो ने दासों और दस्युओं पर विजय प्राप्त की। 6. दस और दस्यु विजित होने के बाद दास बना लिए गए और शूद्र कहलाए। 7. आर्यो में रंगभेद की भावना थी। इसलिए उन्होंने चातुर्वर्ण्य का निर्माण किया। इसके द्वारा उन्होंने श्वेत नस्ल को काली नस्ल से, यथा दासों और दस्युओं से अलग किया। (वही, खण्ड 7, पृष्ठ 65) इसके बाद सातों

विचार बिन्दुओं की सभी स्थापनाओं को गलत बताया। ऋग्वेद के उद्धरण दिये और लिखा "इन (शब्दो) के प्रयोग देखने से निष्कर्ष यह निकलता है कि ये शब्द नस्ल के अर्थ में कहीं भी प्रयुक्त नहीं हुए" (वही पृष्ठ 70) वे आर्यों को विदेशी बताने का तर्क काटते हैं "जहाँ तक वैदिक साहित्य का सम्बंध है, वह इस सिद्धांत के प्रतिकूल है कि आर्यो का मूल निवास भारत से कहीं बाहर था।" (वही) आर्य विदेशी होते तो भारतीय नदियों को माता कहकर प्रणाम न करते। आर्य हम सबके पूर्वज थे।

डॉ0 आम्बेडकर ने रंग (वर्ण) भेद के आधार पर आर्यो और शूद्रों को अलग बताने वाली स्थापना को भी गलत बताया। उन्होंने ऋग्वेद के तमाम उद्धरण दिये और लिखा, "आर्य गौर वर्ण के थे और श्याम वर्ण के भी थे। अश्विनी देवों ने श्याव और रूक्षती का विवाह करवाया। श्याव श्याम वर्ण है, रूक्षती गौर वर्ण है।" डॉ0 अम्बेडकर की स्थापना है "इन उद्धरणों से ज्ञात होता है कि वैदिक आर्यो में रंगभेद की भावना नहीं थी। ऋग्वेद के एक ऋषि दीर्घ तमस् है, वे श्याम वर्ण के, और कण्व भी श्याम वर्ण के थे।" आर्यों के दोनों अवतारी पुरुष श्रीराम व श्रीकृष्ण सांवले थे। महाभारत के प्रतिष्ठित योद्धा अर्जुन भी श्याम रंग के थे। समूचा आर्य समाज एक था। हिन्दू प्राचीन आर्य समाज की ही नई संज्ञा है।

डॉ0 आम्बेडकर ने लिखा "हिन्दुओं से अछूतों को अलग करने की मांग पर मुसलमानों ने जोर दिया था। 27 जनवरी 1910 को उन्होंने सरकार के सामने एक आवेदन प्रस्तुत किया था। उनका दावा था कि देश की राजनीतिक संस्थाओं में उनके प्रतिनिधित्व का अनुपात सभी हिंदुओं की संख्या के अनुसार निश्चित न किया जाना चाहिए वरन् सवर्ण हिंदुओं की संख्या के अनुरूप ही निश्चित होना चाहिए। उनका कहना था कि अछूत हिंदू नहीं हैं।" (खण्ड 5 पृष्ठ 7) लिखा कि "1909 में मुसलमानों की ओर से आगा खां ने वायसराय मिंटों के सामने आवेदन पेश किया था—राजनीतिक संस्थाओं और सार्वजनिक सेवाओं में मुसलमानों को पृथक् और पर्याप्त प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए। 1901 में जो मर्दुमशुमारी हुई थी उसमें मुसलमान कुल आबादी का चौथाई या पांचवां हिस्सा थे। यदि हिन्दू समुदाय से अस्पर्श्य अंगों को निकाल दिया जाए, जो प्रकृति पूजक हैं या छोटे—मोटे धर्म मानने वालें हैं, वे निकाल दिये जाएँ, तो बहुसंख्यक हिंदुओं के मुकाबले मुसलमानों की संख्या का अनुपात पहले से बढ़ जाता है।" (खण्ड 7, पृष्ठ 311—12)

ऋग्वेद में कहीं भी 4 वर्ण नहीं है। शब्द ब्राह्मण का भी वर्ण के अर्थ में प्रयोग नहीं हुआ। डॉ0 रामविलास शर्मा ने लिखा (भारतीय संस्कृति और हिन्दी प्रदेष, पृष्ठ 53) है, "ऋग्वेद में ब्रह्मन् शब्द बहुत बार आया है। इसका अर्थ ब्राह्मण वर्ण नहीं है। ब्रह्मन् की तरह अनेक बार ब्रह्मा का भी प्रयोग हुआ है। इसका मूल अर्थ प्रषस्तिपरक काव्य है। कवि इन्द्र से कहता है, हम तेरे लिए अभूतपूर्व स्तोत्र कहते हैं। (8.90.3) ब्रह्मन् की तरह ब्रह्मा भी कवि, गायक, स्तोता हैं। वशिष्ठ इसी अर्थ में ब्रह्मन् है। (8.90.3) इन्द्र वशिष्ठ से कहते हैं—हे वशिष्ठ, ब्राह्म, तू उर्वषी के मन से उत्पन्न हुआ है। (7.33.11) इन तमाम संदर्भो में स्तुति और स्तोत्र की चर्चा है। ब्राह्मणाम् का अर्थ ब्राह्मण जाति या वर्ण नहीं, कवि, ब्र्ह्मकार गायक है।"

राष्ट्र सर्वोपरि आस्था है। डॉ0 आम्बेडकर ने लिखा, "भारत एक भौगोलिक इकाई है। इस इकाई का निर्माण प्रकृति ने किया है। यह सही है कि भारतवासी आपस में झगड़ते रहते हैं परन्तु इन झगड़ों से उस एकता का नाश नहीं हो सकता जो प्रकृति के समान ही सनातन है। भौगोलिक एकता के साथ ही यहाँ सांस्कृतिक एकता भी है।" डॉ० आम्बेडकर के निष्कर्ष रोमांचकारी हैं। भारत प्रकृति निर्मित राष्ट्र है। राष्ट्र की सांस्कृतिक एकता प्रकृति के समान सनातन है। संविधान निर्माण के आखिरी दिन (25.11.1949) उन्होंने भावुक भाषण दिया। अन्त में कहा, "यहां मैं अपना भाषण खत्म कर देता किन्तु मेरा मस्तिष्क देश की भविष्य चिन्ता से परिपूर्ण है। क्या भारत अपनी स्वतंत्रता बनाये रखने में कामयाब होगा? जाति और मत—मतान्तर राजनैतिक पक्ष बन रहे हैं। क्या भारतीय मत—मतान्तरों को राष्ट्र से श्रेष्ठ मानेंगे या राष्ट्र के मत मतान्तरों से ऊपर?" डॉ0 आम्बेडकर की आस्था का केन्द्र राष्ट्र था। हम सबको अपने भारतरत्न पर गर्व है।

टारगेट किलिंग राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए जरूरी

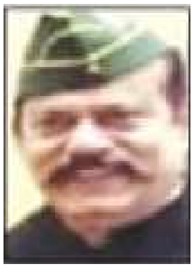

राजीव कुमार श्रीवास्तव

भारत ने पाकिस्तान में हत्याओं का आदेश दिया, दोनों देशों के खुफिया अधिकारियों का कहना है, इंग्लैंड के समाचार पत्र, द गार्डियन ने शुक्रवार, 05 अप्रैल 24 को यह लेख प्रकाशित किया। इस मीडिया रिपोर्ट में अप्रमाणित दस्तावेजों का हवाला देकर कहा गया है की पुलवामा घटना (14) फरवरी 2019) जिसमे 40 भारतीय सुरक्षाकर्मी मारे गए थे, भारत के सुरक्षा सम्बंधित प्रतिक्रिया को निर्णायक मोड़ दिया विदेशी धरती पर छिपे भारतीय मूल के आतंकवादियों को खत्म करने के लिए 2020 के बाद से हरकत उल अंसार, जमात उल मुजाहिदीन और हिज्बुल मुजाहिदीन के 20 आतंकवादियों की पाकिस्तान में हत्या कर दी गई, जिनमें से 2023 में 15 आतंकवादियों शामिल हैं भारतीय खुफिया एजेंसियों ने सऊदी धरती पर बैठे अपने स्लीपर एजेंटों के माध्यम से पाकिस्तान में टारगेट किलिंग की। भारत के विदेश मंत्री श्री जयशंकर ने इसका पुरजोर खंडन किया और कहा कि भारत के पास टारगेट किलिंग करने की कोई भी नीति नहीं है। लेकिन 05 अप्रैल 2024 को एक अन्य राजनीतिक रैली में, प्रधान मंत्री ने कहा कि देश अब शत्रु ताकतों को खत्म करने के लिए अंदर घुसकर जवाब देगा, जो पाकिस्तान के अंदर बालाकोट में हुए भारतीय सैन्य कार्यवाही (26 फरवरी 2019) का उल्लेख था अब इन दोनों बिंदुओं को जोड़कर देखने पर किसी को भी अहिंसा की वकालत करने वाली देश की विदेश नीतियों में बदलाव का आसानी से आकलन या थाह मिल सकता है। भारत का विरोध करने वाले सिर्फ पाकिस्तान में ही नहीं, अपितु कनाडा और अमेरिका में भी सुरक्षित नहीं हैं। **टारगेट किलिंग शब्द कहाँ से आया :** अंग्रेजी भाषा में मर्डर, किलिंग और अस्ससिनेशन, तीनो शब्द किसी दूसरे के जीवन को अवैध रूप या गैरकानूनी तरीके से लेना है को बताती है जो किसी वयक्तिगत, राजनीतिक या धार्मिक मुद्दा बनाने के लिए की जाती है इसके विपरीत अंग्रेजी शब्द डेथ, शारीरिक क्रियाएँ जो जीवन को बनाए रखती हैं, को प्राकृतिक रूप समाप्ति को बतलाता है पश्चिमी भाषा में 'अस्ससिनेशन' शब्द का पहला संदर्भ दांते द्वार रचित इन्फनों 'लो पर्किडो असैसिन' में मिलता है, जिसका अर्थ है 'वह जो पैसे के लिए दूसरों को मारता है।' कालांतर में अमेरिकियों ने टारगेट किलिंग शब्द का प्रयोग अपने रक्षा संस्थानों में प्रशिक्षण के दौरान किया, जो अस्ससिनेशन का दूसरा नाम ही है।

अमेरिकी कार्यकारी आदेश (प्रेसिडेंटस एग्जीक्यूटिव आर्डर) संख्या 12,333 अस्ससिनेशन की इजाजत देता है: हत्या, चाहे शांतिकाल में हो या युद्धकाल में, एक अवैध और गैर कानूनी कार्यवाही है इसी श्रेणी में टारगेट किलिंग या हत्या एक स्पष्ट सरकारी अनुमोदन के साथ किसी विशिष्ट व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह की जानबूझकर की गयी हत्या है। अंतरराष्ट्रीय कानून के नियम इसकी इजाजत नहीं देते और संपूर्ण रूप से उन राष्ट्रों को ही जिम्मेदार मानती हैं जो यह हत्या करवाते हैं अमेरिका में गैर देशों में अस्ससिनेशन करवाने के लिए बकायदा उनके राष्ट्रपति से अनुमोदन के लिए नियम बने हुए हैं, जो एक जटिल प्रक्रिया से गुजरती है 1976 में राष्ट्रपति गेराल्ड फोर्ड ने एक कार्यकारी आदेश (प्रेसिडेंटस एग्जीक्यूटिव आर्डर) संख्या 12,333 जारी कर दशकों से सी आई ए द्वारा चलाई जा रही अस्ससिनेशन को बंद किया और किसी भी सरकारी एजेंसी या कर्मचारी को अस्ससिनेशन या

हत्या करवाने में भाग लेने या योजना बनाने से रोक लगा दिया जिसका पालन बाद के वर्षों में अमेरिकी राष्ट्रपति जिमी कार्टर, रोनाल्ड रीगन और जॉर्ज बुश ने किया। हालाँकि हत्या पर प्रतिबंध कार्यकारी आदेश 12,333 में निहित है, पर अमेरिकी राष्ट्रपति आज भी कानूनी तौर पर चार तरीकों से एक विदेशी नेता की हत्या को अंजाम दे सकते हैं। पहला, अपनी संसद वा कांग्रेस से युद्ध की घोषणा करने के लिए कहें, ऐसी स्थिति में दुश्मन सेना की कमान की जिम्मेदारी निभाने वाला एक विदेशी नेता अस्ससिनेशन के लिए एक वैध लक्ष्य बन जाएगा दूसरा, संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अनुच्छेद 51 के तहत आत्मरक्षा के अधिकार के आधार पर या किसी विदेशी नेता की आपराधिक गतिविधियों पर रोक लगाने के उद्देश्य से हत्या का अधिकार तीसरा, आदेश की संक्षिप्त व्याख्या जिसमें राष्ट्रपति स्वयं व्यक्तियों की हत्या की विशिष्ट योजनाओं को मंजूरी नहीं देता, पर कोलैटरल डैमेज के रूप में हत्या का होना और चौथी स्थिति में प्रतिबंधित आदेश को पलट कर, इसे अपवाद (एक्सेप्शन) बना कर, या उनके कांग्रेस (संसद) से अस्ससिनेशन की मंजूरी ले कर ऐसा करें। इस तरह इन चारों तरीकों से किसी भी तरीके का उपयोग करके, अमेरिकन राष्ट्रपति सैद्धांतिक रूप से कार्यकारी आदेश का उल्लंघन किए बिना किसी विदेशी नेता की हत्या का आदेश दे सकते है।

टारगेट किलिंग को इजराइल ने बढ़ावा दिया : इजराइल द्वारा शुरू किये गए दुसरे देशों में आतंकवादियों की टारगेट किलिंग का उपयोग को अब संयुक्त राज्य अमेरिका और अन्य देशों द्वारा युद्ध और आतंकवाद विरोधी रणनीति के रूप में बढ़ती हुई संख्या के साथ किया जा रहा है। अक्सर सशस्त्र ड्रोन और अन्य सटीक हथियारों के साथ लक्षित हत्याओं की वृद्धि ने सैन्य अभियानों की प्रकृति को बदल दिया है, जिससे राज्यों को लंबे समय से चल रहे संघषों में दूर से हस्तक्षेप करने की अनुमति मिल गई है। संयुक्त राज्य अमेरिका ने 2010 और 2020 के बीच ड्रोन हमलों में 16,900 लोगों को मार डाला, जिनमें 2,200 से अधिक नागरिक शामिल थे जो मुख्य रूप से यमन, पाकिस्तान, सोमालिया और अफगानिस्तान में रह रहे थे। अक्सर कम जवाबदेही के साथ परिभाषित युद्ध क्षेत्रों के बाहर होने वाली यह प्रथा नैतिक और कानूनी मुद्दों को उठा रही है। आलोचकों ने टारगेट किलिंग की प्रभावशीलता पर भी सवाल उठाया है। कॉम्युनिस्ट देश जिनमे रूस, चीन और उत्तरी कोरिया शामिल हैं, टारगेट किलिंग का इतेमाल अपने राजनितिक प्रतिद्वंदियों के खात्मे के लिए व्यापक रूप से कर रहे हैं 13 फरवरी 2024 को यूक्रेन भाग गए रूसी पायलट मक्सिम कुजमिनोव की स्पेन में हत्या कर दी गई कुजमिनोव ने अगस्त 2023 में अपने एमआई–8 हेलीकॉप्टर के साथ यूक्रेन में पलायन कर दिया था और एक अलग नाम और यूक्रेनी पासपोर्ट के साथ स्पेन में रह रहा था। कुजमिनोव के दलबदल के तुरंत बाद रूस की सैन्य खुफिया एजेंसी ने कुजमिनोव के खात्मे संबंध में कहा की आदेश पहले ही मिल चुका है और इसकी पूर्ति केवल समय की बात है। रूस ने अनगिनत लोगों को जिनमे उनके राजनितिक विरोधी एलेक्सी नवलनी और वेगनर ग्रुप के प्रमुख येवगेनी प्रिगोझिन की मौत भी शामिल हैं इसी तरह चीन के विदेश एवं रक्षा मत्रियों का गायब होना ऐसी दिशा में संकेत देते हैं।

11 सितम्बर 2001 से अमेरिका द्वारा संचालित आतंकवाद पर वैश्विक युद्ध (ग्लोबल वॉर ऑन टेरोरिस्म), जिनमे उनके मातृभूमि से दूर विदेशों में आतंकवादी सरगनाओं और उनके संघठन का खात्मा निहित था, अस्ससिनेशन का इस्तेमाल किया गया, जो एक दृष्टि से मानवाधिकार कानून और अंतरराष्ट्रीय मानवीय कानून का स्पस्ट उलंघन था, पर ओसामा बिन लादेन का पाकिस्तान में या फिर अल जवाहरी का काबुल अफगानिस्तान में खात्मा विश्व शांति को बल देता है। यहाँ अमेरिकी कानून विशेषज्ञों ने लेक्स स्पेशलिस, जो एक लैटिन कानूनी कहावत है, का इस्तेमाल करते हैं यह कहावत घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय कानूनों की व्याख्या को बतलाता है कि अधिक विशिष्ट (स्पेसिफिक) नियम अधिक सामान्य (जनरल) नियमों पर हावी होंगे।

स्वराज्य को सुराज्य में बदलने का अवसर

एम वेंकैया नायडू

सुराज्य में यह सुनिश्चित होकि प्रत्येक भारतीय उस समावेशी विकास यात्रा में सहभागी बने जिसका सपना हमारे स्वतंत्रता सेनानियों और संविधान निर्माताओं ने देखा था

इतिहास केवल कुछ घटनाओं का विवरण मात्र में नहीं है। उसके सबक हमें भविष्य की रोशनी भी दिखाते है ताकि हम नई शुरुआत कर सकें। किसी राष्ट्र के इतिहास में ऐसे क्षण आते हैं जो घटनाचक्र करे हमेशा के लिए बदल देते हैं। भारत के स्वाधीनता संघर्ष में 'भारत छोड़ो आंदोलन' निःसंदेह ऐसा ही एक पड़ाव था जिसने आजादी के अभियान की काया ही पलट दी। इसने आजादी के संघर्ष को गति देने के साथ ही पूरे देश को एकजुटता के धागे में पिरोने का काम किया। जब दुनिया युद्ध की विभीषिका के साये में थी तब शांतिदूत बनकर उभरे महात्मा गांधी अहिंसा के सिद्धांत के प्रति समर्पित रहे और 8 अगस्त, 1942 की शोम को मुंबई के ग्वालिया टैंक मैदान से देशवासियों के लिए 'करो या मरो' का नारा दिया। अब यही मैदान अगस्त क्रांति मैदान कहलाता है। अहिंसक संघर्ष को लेकर उनकी अपील ने देशवासियों पर जादुई असर किया। देश में हर तबके के लोग इस आंदोलन से जुड़े और उन्होंने निर्मम विदेशी शासन खिलाफ अपनीआवाज बुलंद की। भारत से ब्रिटिश शासन की समाप्ति को लेकर गवत्या की अपील ने राष्ट्रीय पुनर्जागरण में अप्रत्याशित भूमिका निभाई। इसने ताफ्यालीन अमेरिकी राष्ट्रपति जैकलिन रुजवेल्ट को भी भारत की आजादी की मांग के समर्थन में लामबंद किया। आंदोलन के असर से घबराए अंग्रेजों ने महात्मा गांधी सहित लगभग सभी प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों को गिरफ्तार कर लिया। अंग्रेजों ने आंदोलन का क्रूरतापूर्वक दमन फिया, लेकिन कुछ इलाकों में हिसका प्रदर्शन के बावजूद इसने ऐसा प्रभाव उत्पन्न किया कि देश से अंग्रेजों की विदाई की अमीन तैयार हो गई।

8 अगस्त, 1942 को अपने ऐतिहासिक भाषण में महात्मा गांधी ने कहा था, श्मेरी राय में दुनिया के इतिहास में हमसे ज्यादा लोकतांत्रिक स्वाधीनता संघर्ष कहीं और नहीं हुआ होगा। जेल में मैंने फ्रांसीसी क्रांति के बारे में पड़ा और पंडित जवाहरलाल ने मुझे रूप्सी क्रांति के बारे में भी कुछ बताया, मगर उनकी लड़ाई हिंसक रूप से लड़ी गई और लोकतांत्रिक आदशों के मामले में नाकाम रही। मैं अहिंसा द्वारा स्थापित लोकतंत्र की कल्पना करता हूं जिसमें सभी के लिए बराबर स्वतंत्रता हो। जब आप इसे महसूस कर लेंगे तो हिंदू और मुसलमान के बीच का भेद भूलकर केवल भारतीय होने के बारे में सोचेंगे।

तमाम मुश्किलों के बाद हासिल हुई आजादी को अब 71 साल से अधिक हो गए हैं। ऐसे में हम सभी का दायित्व है कि हम राष्ट्रपिता और उन अन्य राष्ट्रीव नायकों के सपने को पूरा करने के लिए जी–जान से जुटें जिन्होंने हमारी आजादी के लिए तमाम त्याग किए। बीते सात दशकों में हमने काफी प्रगति की है, लेकिन सभी राज्यों के विकास में विषमता भी है। अगले 15 से 20 वर्षों के दौरान जब भारत दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक के रूप में तब्दील होने को तैयार है तब हम गरीबी, निख्खरता, शहरी–ग्रामीण खाई, लैंगिक भेदभाव, कृषि संकट और विकास के मोर्वे पर असमानता जैसे अवरोधों के चलते अपने देश की तरक्की में अवरोध बर्दाश्त नहीं कर सकते। हम अपने सार्वजनिक एवं सामाजिक विमर्श की दिशा को नए सिरे से तय करें ताकि वह भारत को तेज तरक्की के पथ पर अग्रसर करने में मदद करें और ऐसे नए भारत के निर्माण में सहायता मिले जिसमें जाति, धर्म या क्षेत्र जैसे मुद्दे गौण हो जाएं और प्रत्येक व्यक्ति देशहित को सर्वोपरि रखे। आखिर हम निर्धन तबकों, किसानों, महिलाओं,

दस्तकारों और युवाओं के सशक्तीकरण के बिना तरक्की की रफ्तार कैसे तेज कर सकते हैं?

सभी वर्गों के आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक उत्थान में शिक्षा सबसे अहम कुंजी है। हमें यह तय करना होगा कि हमारे बच्चे स्कूली शिक्षा से वंचित न रह जाएं। इसी तरह यह भी सुनिश्चित करना होगा कि महिलाएं अशिक्षित न रहें। योग्यता एवं प्रवीणता के मामले में भी कोई समझौता नहीं लेना चाहिए ताकि दोयम दर्जे के लोगों का बोलबाला न हो। सभी क्षेत्रों के मानकों और नैतिक मूल्यों में आ रही गिरावट को भी हमें रोकना होगा। सामाजिक चेतना का भावं जगाकर सहअस्तित्व और एकजुटता के भावच्चो बढ़ाना होगा। बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ, मुद्रा बैंक स्किल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया, खेलो इंडिया और जनधन–आधार–मोबाइल जैसे सरकारी कार्यक्रमों एवं योजनाओं का मकसद ही वंचित वर्ग के लोगों को सशक्त बनाना है। एक व्यापक राष्ट्रीय पुनर्जागरण की जरूरत है जो हमारे स्वराज्य को सुराज्य में बदले। इसमें सुनिश्चित हो में कि प्रत्येक भारतीय समावेशी विकास यात्रा सहभागी बने जिसका सपना हमारे स्वतंत्रता सेनानियों और संविधान निर्माताओं ने देखा था।

संविधान की प्रस्तावना के अनुसार हम एक संप्रभु, समाजवादी, सेक्युलर, लोकतांत्रिक गणतंत्र हैं जो सभी नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, धार्मिक मान्यता एवं उपासना की स्वतंत्रता के साथ ही अवसरों की समानता प्रदान करता है। ऐसे संविधान के लागू होने के 68 वर्ष बाद भी हम अपने दैनिक जीवन में इन आदशों को आत्मसात करने में काफी पीछे हैं। कुछ विचलित करने वाले रुझान है जो संविधान में वर्णित मूल सिद्धांतों का मखौल उड़ा रहे हैं। हमें संविधान सभा में डॉ. आंबेडकर के अंतिम भाषण का स्मरण करना होगा जिसमें उन्होंने कहा था, हमें यह सहीं भूलना चाहिए कि स्वतंत्रता ने हमें गहरी जिम्मेदारी दी है। आजादी के साथ तो हमने सड़बड़ियों के लिए अंग्रेजों पर दीप माने का चहाना के खो दिया। अगर वहां में चीजें बिगड़ती है इसके दोषी हम स्वयं होंगे। हम देश को औपनिवंशिक शक्तियों से उ कराने में सफल से। अब हमें उन ग्रामाजिक बुराइयों से पीछा कुङ्गाना होगा जिनका बदसूरत रहता है। जातिवाद, सांडाधिकार, प्राटाचार ध र्माचता और असहिष्णुता के खिलाफ हमें समवेत स्वर में आयात उठाने की दरकार हैं। यह नए भारत के आकार लेने का समय है जी हम सभी की ख्वाहिश है। ऐसा नया भारत उडी आर्थिक रूम से समस्त, सामाजिक समरसता से परिपूर्ण और सांस्कृतिक रूप में गतिशील हो। जातिगत एवं संगिक भेदभाव के साथ हो महिलाओं और कमक्षर समें के खिलाफ हिंसा हमें बिल्कुल भी बात नहीं होनी चाहिए। हमें सार्वजनिक विमर्श को उस दिशा में मोड़ना चाहिए जो हमारे समृद्ध मानव एवं प्राकृतिक संसाधनों के समुचित उपयोग से सतत विकास की प्रक्रिया की तेजों दें। विगसत में मिले ज्ञान की अपनी अमूल्य धरोहर पर भी हमें च्यान देना चाहिए। अपने धर्मग्रचों और संविधान में वर्णित मूल्यों को पीरमें अपने जीवन में उतारना चाहिए। ऐसे अवशर बहुत कम उराते हैं जब आर्थिक हालात और जनसांख्यिकीय हालात के अनुकूल होते हैं ये वह अवसर खोना नहीं चाहिए। अपने लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए देश में सभी धामतार है। बस हमें चीजों को बेहतर तरीके से करने का संकल्प लेना होगा। इस बात को तेलुगु कवि मुरजाता अष्पा राव की यह कविता अच्छे में व्यक्त करती है, मेरे मित्र बहुत बातें से चुकी हैं, काब कुछ ठोस काम किया जाए। समय आ गया है कि अम सभी सामाजिक बुराइयों के पीछे पढ़कर उनके खिलाफ 'भारत छोड़ो' आदोलन को आधान करें।

रामराज्य का तात्पर्य

– संकलित

शबरी को आश्रम सौंपकर महर्षि मतंग जब देवलोक जाने लगे, तब शबरी भी साथ जाने की जिद करने लगी। शबरी की उम्र दस वर्ष थी। वो महर्षि मतंग का हाथ पकड़ रोने लगी। महर्षि शबरी को रोते देख व्याकुल हो उठे। शबरी को समझाया पुत्री इस आश्रम में भगवान आएंगे, तुम यहीं प्रतीक्षा करो।

राम वन में बस इसलिए आया है, ताकि "जब युगों का इतिहास लिखा जाए, तो उसमें अंकित हो कि शासन/प्रशासन और सत्ता जब पैदल चलकर वन में रहने वाले समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे, तभी वह रामराज्य है।"

अबोध शबरी इतना अवश्य जानती थी कि गुरु का वाक्य सत्य होकर रहेगा, उसने फिर पूछा– कब आएंगे..? महर्षि मतंग त्रिकालदर्शी थे। वे भूत भविष्य सब जानते थे, वे ब्रह्मर्षि थे। महर्षि शबरी के आगे घुटनों के बल बैठ गए और शबरी को नमन किया। आसपास उपस्थित सभी ऋषिगण असमंजस में डूब गए। ये उलट कैसे हुआ। गुरु यहां शिष्य को नमन करे, ये कैसे हुआ? महर्षि के तेज के आगे कोई बोल न सका। महर्षि मतंग बोले– पुत्री अभी उनका जन्म नहीं हुआ। अभी दशरथ जी का लग्न भी नहीं हुआ। उनका कौशल्या से विवाह होगा। फिर भगवान की लम्बी प्रतीक्षा होगी। फिर दशरथ जी का विवाह सुमित्रा से होगा। फिर प्रतीक्षा.. फिर उनका विवाह कैकई से होगा। फिर प्रतीक्षा.. फिर वो जन्म लेंगे, फिर उनका विवाह माता जानकी से होगा। फिर उन्हें 14 वर्ष वनवास होगा और फिर वनवास के आखिरी वर्ष माता जानकी का हरण होगा। तब उनकी खोज में वे यहां आएंगे। तुम उन्हें कहना आप सुग्रीव से मित्रता कीजिये। उसे आतताई बाली के संताप से मुक्त कीजिये, आपका अभीष्ट सिद्ध होगा। और आप रावण पर अवश्य विजय प्राप्त करेंगे।

शबरी एक क्षण किंकर्तव्यविमूढ़ हो गई। अबोध शबरी इतनी लंबी प्रतीक्षा के समय को माप भी नहीं पाई। वह फिर अधीर होकर पूछने लगी– इतनी लम्बी प्रतीक्षा कैसे पूरी होगी गुरुदेव?

महर्षि मतंग बोले– वे ईश्वर है, अवश्य ही आएंगे। यह भावी निश्चित है। लेकिन यदि उनकी इच्छा हुई तो काल दर्शन के इस विज्ञान को परे रखकर वे कभी भी आ सकते है। लेकिन आएंगे 'अवश्य'...!

जन्म मरण से परे उन्हें जब जरूरत हुई तो प्रह्लाद के लिए खम्बे से भी निकल आये थे। इसलिए प्रतीक्षा करना। वे कभी भी आ सकते है। तीनों काल तुम्हारे गुरु के रूप में मुझे याद रखेंगे। शायद यही मेरे तप का फल है।

शबरी गुरु के आदेश को मान वहीं आश्रम में रुक गई। उसे हर दिन प्रभु श्रीराम की प्रतीक्षा रहती थी। वह जानती थी समय का चक्र उनकी उंगली पर नाचता है, वे कभी भी आ सकतें है।

हर रोज रास्ते में फूल बिछाती है और हर क्षण प्रतीक्षा करती। कभी भी आ सकतें हैं। हर तरफ फूल बिछाकर हर क्षण प्रतीक्षा। शबरी बूढ़ी हो गई। लेकिन प्रतीक्षा उसी अबोध चित्त से करती रही। और एक दिन उसके बिछाए फूलों पर प्रभु श्रीराम के चरण पड़े। शबरी का कंठ अवरुद्ध हो गया। आंखों से अश्रुओं की धारा फूट पड़ी। गुरु का कथन सत्य हुआ। भगवान उसके घर आ गए। शबरी की प्रतीक्षा का फल ये रहा कि जिन राम को कभी तीनों माताओं ने जूठा नहीं खिलाया, उन्हीं राम ने शबरी का जूठा खाया। ऐसे पतित पावन मर्यादा, पुरुषोत्तम, दीन हितकारी श्री राम जी की जय हो। जय हो। जय हो।

एकटक देर तक उस सुपुरुष को निहारते रहने के बाद वृद्धा भीलनी के मुंह से स्वर/बोल फूटे—कहो राम ! शबरी की कुटिया को ढूंढ़ने में अधिक कष्ट तो नहीं हुआ..? राम मुस्कुराए— यहां तो आना ही था मां, कष्ट का क्या मोल/मूल्य..?

जानते हो राम! तुम्हारी प्रतीक्षा तब से कर रही हूँ, जब तुम जन्मे भी नहीं थे, यह भी नहीं जानती थी कि तुम कौन हो? कैसे दिखते हो? क्यों आओगे मेरे पास? बस इतना ज्ञात था कि कोई पुरुषोत्तम आएगा, जो मेरी प्रतीक्षा का अंत करेगा।

राम ने कहा— तभी तो मेरे जन्म के पूर्व ही तय हो चुका था कि राम को शबरी के आश्रम में जाना है।"

एक बात बताऊँ प्रभु ! भक्ति में दो प्रकार की शरणागति होती है। पहली 'वानरी भाव' और दूसरी 'मार्जारी भाव'।

"बन्दर का बच्चा अपनी पूरी शक्ति लगाकर अपनी माँ का पेट पकड़े रहता है, ताकि गिरे न.. . उसे सबसे अधिक भरोसा माँ पर ही होता है और वह उसे पूरी शक्ति से पकड़े रहता है। यही भक्ति का भी एक भाव है, जिसमें भक्त अपने ईश्वर को पूरी शक्ति से पकड़े रहता है। दिन रात उसकी आराधना करता है...!" (वानरी भाव) पर मैंने यह भाव नहीं अपनाया।

"मैं तो उस बिल्ली के बच्चे की भाँति थी, जो अपनी माँ को पकड़ता ही नहीं, बल्कि निश्चिन्त बैठा रहता है कि माँ है न, वह स्वयं ही मेरी रक्षा करेगी, और माँ सचमुच उसे अपने मुँह में टांग कर घूमती है। मैं भी निश्चिन्त थी कि तुम आओगे ही, तुम्हें क्या पकड़ना...। (मार्जारी भाव) राम मुस्कुराकर रह गए!!

भीलनी ने पुनः कहा— सोच रही हूँ बुराई में भी तनिक अच्छाई छिपी होती है न... "कहाँ सुदूर उत्तर के तुम, कहाँ घोर दक्षिण में मैं! तुम प्रतिष्ठित रघुकुल के भविष्य, मैं वन की भीलनी। यदि रावण का अंत नहीं करना होता तो तुम कहाँ से आते..?" राम गम्भीर हुए और कहा— भ्रम में न पड़ो मां! "राम क्या रावण का वध करने आया है..?" रावण का वध तो लक्ष्मण अपने पैर से बाण चलाकर भी कर सकता है। राम हजारों कोस चलकर इस गहन वन में आया है, तो केवल तुमसे मिलने आया है मां, ताकि "सहस्त्रों वर्षों के बाद भी, जब कोई भारत के अस्तित्व पर प्रश्न खड़ा करे तो इतिहास चिल्ला कर उत्तर दे, कि इस राष्ट्र को क्षत्रिय राम और उसकी भीलनी माँ ने मिलकर गढ़ा था।"

जब कोई भारत की परम्पराओं पर उँगली उठाये तो काल उसका गला पकड़कर कहे कि नहीं! यह एकमात्र ऐसी सभ्यता है जहाँ, एक राजपुत्र वन में प्रतीक्षा करती एक वनवासिनी से भेंट करने के लिए चौदह वर्ष का वनवास स्वीकार करता है।

राम वन में बस इसलिए आया है, ताकि "जब युगों का इतिहास लिखा जाए, तो उसमें अंकित हो कि शासन/प्रशासन और सत्ता जब पैदल चलकर वन में रहने वाले समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे, तभी वह रामराज्य है।"

(अंत्योदय) 'राम वन में इसलिए आया है, ताकि भविष्य स्मरण रखे कि प्रतीक्षाएँ अवश्य पूरी होती हैं।

होलिकोत्सव मनाने के वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक कारण

– डॉ. ओम प्रकाश पाण्डेय

वैदिक काल में होली पर्व को नवात्रेष्टि यज्ञ कहा जाता था। उस समय खेत के अधपके अन्न को यज्ञ में दान करके प्रसाद लेने का विधान समाज में व्याप्त था। अन्न को होला कहते हैं, इसी से इसका नाम होला उत्सव और कालांतर में होलिकोत्सव हो गया। भारतीय ज्योतिष के अनुसार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन से नववर्ष का भी आरंभ माना जाता है। इस उत्सव के बाद ही चैत्र महीने का आरंभ होता है। अतः यह पर्व नवसंवत का आरंभ तथा वसंतागमन का प्रतीक भी है।

होली के त्यौहार के समय मौसम में परिवर्तन होता है और वसंत में नया जीवन भी उत्पन्न होता है। पतझड़ में अधिकांश पेड़ पौधे अपनी पत्तियों को त्याग देते हैं। नए पेड़–पौधे खेतों में उगते हैं। अब ऐसे में कचरे और सूखी पत्तियों आदि को जलाने की जरूरत होती है ताकि नए सिरे से काम शुरू किया जा सके।

आयुर्वेद के अनुसार दो ऋतुओं के संक्रमण काल में मानव शरीर रोगों और बीमारियों से ग्रसित हो जाता है। शिशिर ऋतु में शीत के प्रभाव से शरीर में कफ की अधिकता हो जाती है और बसंत ऋतु में तापमान बढने पर यह कफ शरीर से बाहर निकलने की क्रिया में कफ दोष पैदा होता है, जिसके कारण सर्दी, खांसी, सांस की बीमारियों के साथ ही गंभीर रोग जैसे खसरा, चेचक आदि होते हैं। होलिका पूजन एवं होली की आग सेकना होली की राख को शरीर पर लगाने से इन रोगों से छुटकारा मिलता है। अरण्ड के पेड़ व गाय के गोबर की यह राख यानी भस्म एंटीबैक्टीरियल एंटीफंगल और एंटीवायरल होती है। 'यह राख मानव शरीर के समस्त चर्म रोगों को समाप्त करने की शक्ति रखती है। और मानव शरीर के चमड़ी में होने वाले रंध्र (सूक्ष्म छेद) को खोल देती है। इन्हीं रन्ध्रों से हमारी चमड़ी बाहर के ताप और हवामान को ग्रहण करता है और पसीना निकालने के लिए का उपयोग करता है। वर्ष में एक बार इस भस्म को हमारे शरीर में अच्छे से लगा लेने से शरीर के अंदर की नकारात्मक उर्जा भी समाप्त होती है।

पुराने जमाने में जिन चीजों से रंगों को बनाया जाता था जैसे बेल, हल्दी, नीम, चुकंदर, पलाश

आदि ये सब शरीर को कूलिंग और हीलिंग इफेक्ट देते हैं और इसलिए भी होली के त्यौहार को एक क्लींजिंग रिचुअल के तौर पर देखा जाता है और ये फैक्ट्स सार्वजनिक हैं। वाकई होली के त्यौहार का साइंटिफिक सेंस देखा जा सकता है।

यह तो हुआ होली मनाने का वैज्ञानिक कारण अब कुछ मनोवैज्ञानिक कारणों पर भी चिंतन कर लेते हैं।

होली हिंदुस्तान की गहरी प्रज्ञा से उपजा हुआ त्योहार है। उसमें पुराण कथा एक आवरण है, जिसमें लपेटकर मनोविज्ञान की घुट्टी पिलाई गई है। सभ्य मनुष्य के मन पर नैतिकता का इतना बोझ होता है कि उसका रेचन (बाहर निकालना) करना जरूरी है, अन्यथा वह पागल हो जाएगा। इसी को ध्यान में रखते हुए होली के नाम पर रेचन की सहूलियत दी गई है।

आज भी महाराष्ट्र, कर्नाटक व गोवा आदि प्रांतों में होली जिसे शिमगा भी कहते हैं। होली की रात में गाँव के लोगो का नाम लेकर गाली बकने का रिवाज है जिसे बोम मारना कहते है।

गाँव के कुछ लोग रात में निकलकर प्रत्येक व्यक्ति के घर के बाहर आकर उसके नाम की बोम मारते है। जो एक तरह गाली ही होती है। सुनने वाला इसे होली का त्यौहार मानकर सह लेता है। इससे उसे भी पता चल जाता है उसकी कौन सी बात समाज को ठीक नहीं लगती जिसे वह सुधारने का प्रयास करता है।

पुराणों में इसके बारे में जो कहानी है, उसकी कई गहरी परतें हैं।

हिरण्यकश्यपु और प्रह्लाद की पुराण कथा में जिस तरफ इशारा है, वह एक तरह से आस्तिक और नास्तिक का संघर्ष–है और वह हमारे दैनंदिन जीवन में रोज होता है, प्रतिपल होता है।

पुराण केवल इतिहास नहीं है, वह मनुष्य के जीवन का अंतर्निहित सत्य है। इसमें आस्तिकता और नास्तिकता का संघर्ष है, पिता और पुत्र का, कल और आज का, शुभ और अशुभ का संघर्ष है।

होली की कहानी का प्रतीक देखें तो हिरण्यकश्यपु पिता है। पिता बीज है, पुत्र उसी का अंकुर है। हिरण्यकश्यपु जैसी दुष्टात्मा को पता नहीं कि मेरे घर आस्तिक पैदा होगा, मेरे प्राणों से आस्तिकता जन्मेगी। इसका विरोधाभास देखें। इधर नास्तिकता के घर आस्तिकता प्रकट हुई और हिरण्यकश्यपु घबरा गया। जीवन की मान्यताएं, जीवन की धारणाएं दांव पर लग गईं।

ओशो ने इस कहानी में छिपे हुए प्रतीक को सुंदरता से खोला है, श्हर बाप बेटे से लड़ता है। हर बेटा बाप के खिलाफ बगावत करता है। और ऐसा बाप और बेटे का ही सवाल नहीं है – हर 'आज' 'बीते कल' के खिलाफ बगावत है। वर्तमान अतीत से छुटकारे की चेष्टा करता है।

अतीत पिता है, वर्तमान पुत्र है। हिरण्यकश्यपु राक्षस बाहर नहीं है, न ही प्रहलाद बाहर है। हिरण्यकश्यपु और प्रह्लाद दो नहीं हैं – प्रत्येक

व्यक्ति के भीतर घटने वाली दो घटनाएं हैं।

जब तक मन में संदेह है, हिरण्यकश्यपु मौजूद है। तब तक अपने भीतर उठते श्रद्धा के अंकुरों को तुम पहाड़ों से गिराओगे, पत्थरों से दबाओगे, पानी में डुबाओगे, आग में जलाओगे– लेकिन तुम जला न पाओगे। जहां संदेह के राजपथ हैंय वहां भीड़ साथ है। जहां श्रद्धा की पगडंडियां हैंय वहां तुम एकदम अकेले हो जाते हो, एकाकी। संदेह की क्षमता सिर्फ विध्वंस की है, सृजन की नहीं है।

संदेह मिटा सकता है, बना नहीं सकता। संदेह के पास सृजनात्मक ऊर्जा नहीं है।

आस्तिकता और श्रद्धा कितनी ही छोटी क्यों न हो, शक्तिशाली होती है।

प्रह्लाद के भक्ति गीत हिरण्यकश्यपु को बहुत बेचौन करने लगे होंगे। उसे एक बारगी वही सूझा जो सूझता है– नकार, मिटा देने की इच्छा। नास्तिकता विध्वंसात्मक है, उसकी सहोदर है आग।

इसलिए हिरण्यकश्यपु की बहन है अग्नि, होलिका। लेकिन अग्नि सिर्फ अशुभ को जला सकती है, शुद्ध तो उसमें से कुंदन की तरह निखरकर बाहर आता है। इसीलिए आग की गोद में बैठा प्रह्लाद अनजला बच जाता है।

उस परम विजय के दिन को हमने अपनी जीवन शैली में उत्सव की तरह शामिल कर लिया। फिर जन सामान्य ने उसमें रंगों की बौछार जोड़ दी। बड़ा सतरंगी उत्सव है। पहले अग्नि में मन का कचरा जलाओ, उसके बाद प्रेम रंग की बरसात करो। यह होली का मूल स्वरूप था। इसके पीछे मनोविज्ञान है अचेतन मन की सफाई करना।

इस सफाई को पाश्चात्य मनोविज्ञान में कैथार्सिस या रेचन कहते हैं। साइको थेरेपी का अनिवार्य हिस्सा होता है मन में छिपी गंदगी की सफाई। उसके बाद ही भीतर प्रवेश हो सकता है।

जापान में कई कम्पनियों में मजदूरों को स्वस्थ रखने के लिए एक अनोखी विधि का प्रयोग किया जाता है। जिसमे मजदूरों के लिए एक अलग से कमरा बना होता है और उसमे उनके बॉस का पुतला (साफ्ट टॉयज) होता है वहां एक ब्लेक बोर्ड व चाक भी होता है सप्ताह में एक दिन प्रत्येक मजदूर वहां जाकर अपने मन की भड़ास बोर्ड पर लिखकर या उस बॉस के खिलौने को अपना जूता मारकर निकालता है।

होली जैसे वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक पर्व का हम थोड़ी बुद्धिमानी से उपयोग कर सकें तो इस एक दिन में बरसों की सफाई हो सकती है।

सैन्य संदेश के सदस्य बनें

पत्रिका 'सैन्य संदेश' का सदस्य बनें। अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद के हर पदाधिकारी को पत्रिका का आजीवन सदस्य (Life Time Member) बनना अपेक्षित है। पत्रिका का वार्षिक शुल्क रू0 300/– और आजीवन सदस्यता शुल्क रू0 2500/– है। वार्षिक सदस्यों को एक वर्ष बाद पुनः सदस्यता नवीनीकरण अनिवार्य है जिसके लिये प्रति वर्ष रू0 300/– देय है। सदस्यता शुल्क आनलाइन पेयमेंट (Editor Sainya Sandesh A/c No. 0293000109102061 Punjab National Bank, IFS Code PUNB0029300) पर देय है। ऑनलाइन पेयमेंट का स्क्रीन शॉट सैन्य संदेश नेशनल whatsapp ग्रुप में या सम्पादक/सहसम्पादक/ कोषाध्यक्ष के फोन पर जो पत्रिका में सबसे पीछे के पृष्ठ पर अंकित है, भेजें। साथ में सब्सक्राइबर सदस्य का पोस्टल एड्रेस पिन कोड तथा मोबाइल नम्बर के साथ अवश्य भेजें।

सेवा निवृत्त व्यक्ति बनाम फ्यूज बल्ब...

– कोलुंबा कालीधर

एक छोटे से शहर में एक आईएएस अफसर अपने परिवार सहित रहने के लिये आये, जो हाल ही में सेवानिवृत्त हुए थे? ये अफसर हैरान–परेशान से रोज शाम को अपने घर के नजदीक के एक पार्क में टहलते हुए, अन्य लोगों लोगों को तिरस्कार भरी नजरों से देखते थे और किसी से भी बात नहीं करते थे ?

एक दिन वे एक बुजुर्ग के पास गुफ्तगू के लिए बैठे और फिर प्रतिदिन उनके पास बैठने लगे। उनकी वार्ता का विषय एक नही होता था मैं इतना बड़ा आईएएस अफसर था? यहां तो मैं मजबूरी में आ गया हूं? मुझे तो दिल्ली में बसना चाहिए था? और बुजुर्ग शांतिपूर्वक उनकी बातें सुना करते थे।

सेवानिवृत्त अफसर की घमंड भरी बातों से परेशान होकर एक दिन बुजुर्ग ने उनसे पूछा कि आपने कभी फ्यूज बल्ब देखे हैं? बल्ब के फ्यूज हो जाने के बाद क्या कोई देखता है कि बल्ब किस कम्पनी का बना हुआ था? कितना दाम का था? कितने वाट का था? उससे कितनी रोशनी होती थी? बुजुर्ग ने आगे फिर कहा कि, बल्ब के फ्यूज होने के बाद इनमें से कोई भी बात बिलकुल भी मायने नहीं रखती है? लोग बल्ब को कबाड़ में डाल देते हैं? मैं सही कह रहा हूं कि नहीं? फिर जब उन रिटायर्ड आईएएस अधिकारी महोदय ने सहमति में

सिर हिलाया तो बुजुर्ग फिर बोले– रिटायरमेंट के बाद हम सबकी स्थिति भी फ्यूज बल्ब जैसी हो जाती है? हम कहां काम करते थे? कितने बड़े पद पर थे? हमारा क्या रुतबा था? यह सब अब कोई मायने नहीं रखता?

बुजुर्ग ने बताया कि मैं सोसाइटी में पिछले कई वर्षों से रहता हूं पर आज तक किसी को यह नहीं बताया कि मैं दो बार सांसद व शिक्षा मंत्री रह चुका हूं? उन्होंने आगे कहा कि वो जो सामने वर्मा जी बैठे हैं वे रेलवे के महाप्रबंधक थे? और वे जो सामने से आ रहे हैं साहब वे सेना में ब्रिगेडियर थे? और बैरवा जी इसरो में चीफ थे? लेकिन हममें से किसी भी व्यक्ति ने ये बात किसी को नहीं बताई क्योंकि मैं जानता हूं कि सारे फ्यूज बल्ब फ्यूज होने के बाद एक जैसे ही हो जाते हैं? चाहे वह जीरो वाट का हो या 50 वाट का या फिर 1000 वाट का हो? कोई रोशनी नहीं, तो कोई भी उपयोगिता नहीं? सिर्फ कबाड़ होने के सिवाय।

उन्होंने आगे कहा कि लोग अपने पद को लेकर इतने वहम में रहते हैं कि रिटायरमेंट के बाद भी उनसे अपने बीते दिन भुलाये नहीं भूलते। वे अपने घर के आगे नेम प्लेट लगाते हैं रिटायर्ड आइएएस / रिटायर्ड आईपीएस / रिटायर्ड पीसीएस / रिटायर्ड जज आदि बुजुर्ग ने कहा कि माना आप बड़े आफिसर थे? काबिल भी थे? पर अब क्या? अब यह बात मायने नहीं रखती है बल्कि मायने यह रखता है कि पद पर रहते समय आप इंसान कैसे थे? आपने समाज के लोगों को कितनी तवज्जो दी? समाज को क्या दिया? कितने काम आये? या फिर सिर्फ घमंड में ही ऐंठे रहे।

बुजुर्ग आगे बोले कि अगर पद पर रहते हुए कभी घमंड आये तो बस याद कर लेना कि एक दिन आपको भी फ्यूज होना है?

बुजुर्ग की बातों को सुनकर सेवानिवृत्त अधिकारी सन्न रह गए और उनकी नजरें झुक गई।

यह उन लोगों के लिये एक आइना है जो पद और सत्ता में रहते हुए कभी अपनी कलम से किसी का हित नहीं करते और रिटायरमेंट के बाद ऐसे लोगों को समाज की बड़ी चिंता होने लगती है? अभी भी वक्त है? चिंतन करिये तथा समाज की मदद कीजिये?

अपने पद रूपी बल्ब से समाज व देश को रोशन करिये, तभी रिटायरमेंट के बाद समाज आपको अच्छी नजरों से देखेगा और आपका सम्मान करेगा? सुप्रभात दोस्तों।

कृष्ण चरित मानस

गीता स्कंद

षोडश अध्याय

डां शशिकान्त तिवारी 'विनोद जी' महाराज
संस्थापक मुस्कॉन

त्राहि माम् कृपया कृष्ण शरणागत मातुराम।
नमस्ते पुण्डरीकाक्ष पुराण पुरुषोत्तम।।

भगवान उवाच

दैवीसम्पदा ले उत्पन्न हुए अभय अन्तःशुद्ध निर्मल ध्यान।
दैवीसम्पदा है इंद्रियदमन स्वाध्याय स्वधर्म कीर्तन योग यज्ञ दान।। दोहा।।
अहिंसा सत्यप्रिय भाषण क्रोधत्याग चित्तस्थिर अभिमान त्याग भाव।।
दया लज्जा आचरण कोमलता निन्दा से दूर व्यर्थ चेष्टा का अभाव।। दोहा।।
तेज धृति शौच क्षमा शत्रु अभाव।
भारत ये दैवी सम्पदा के भाव।।
पार्थ दम्भी घमंडी क्रोधी अभिमानी।
ये आसुरीसंपदा पुरुष होत अज्ञानी।।
मुक्ति देती दैवी संपदा।
बंधन बांधती आसुरी संपदा।।
पांडव सुन तू शोक न कर।
उत्पन्न हुआ तू दैवीसंपदा लेकर।।
पार्थ इह लोक दो प्रकृति।
दैवी मनुष्य और आसुरी प्रकृति ।।
दैवी प्रकृति सुना अपारा।
असुरप्रकृति अब सुन विस्तारा।।
असुर नहीं जाने प्रवृत्ति निवृत्ति।
न सत्य शौच ना श्रेष्ठआचरण वृति।।
आसुरी मनुष्य ईश्वर ना माने।
जगत को आश्रयहीन असत्य बतावे।।
आसुरी कहे बिन ईश्वर स्त्रीपुरुष संयोग जगत आधारा।
केवल काम हेतु ही बतावे और कछु नहि यह संसारा।। दोहा।।
मिथ्या ज्ञान अवलंबन करते।
स्वभाव नष्ट अल्प बुद्धि होते।।
क्रूरकर्म अपकार में लिप्त होते।
जगत नाश मे समर्थ होते।।
दंभ मानमद कामना ले फिरते।
मिथ्या भ्रष्टआचरण धर विचरते।।
मृत्युपर्यंत चिंताओं में डूबे रहते।
विषय भोग मे तत्पर रहते।।
आशा काम क्रोध परायण होते।
विषयभोग अन्याय से धनसंग्रह करते।।
इतना पाया और मनोरथ पाये।
इतना धन है और हो जाये।।
शत्रु मै मारा और मार डालू।
मैं ही ईश्वर सिद्ध सुखी बलवानू।।
बड़ाकुटुंबी मै बड़ा ही धनी।
यज्ञ आमोद प्रमोद मैं ही दानी।।
आसुर अज्ञान से मोहित भ्रमितचित्त मोहजाल से होत समावृत।
कामना भोग आसक्त आसुर लोग जाई गिरे महानरक अपवित्र।। दोहा।।
माने आपहि श्रेष्ठ धनी घमंडी।
नाममात्र यज्ञ यजन करे पाखंडी।।
अहंकार बल घमंडी क्रोधी कामी।
परनिंदा करे द्वेष रखे मुझअंतर्यामी।।
द्वेषी नराधम क्रूर होवे पापाचारा।
आसुरी योनि में मै भेजू संसारा।।
मूढ़ जन्म जन्म आसुरी योनि पाते।
कौन्तेय नीच गति नरक मे जाते।।
काम क्रोध लोभ नरक के द्वार।
आत्मा नाशे इनको दो त्याग।।
कौन्तेय तीनों नरक द्वार हो मुक्त।
कल्याण आचरण करे जे पुरुष।।
इससे ही वह परम गति को पाता।
मुझको वह प्राप्त हो जाता।।
शास्त्रत्याग मनमाना आचरण करता।
ना सुख सिद्धि ना परमगति पाता।।
कर्तव्य और अकर्तव्य व्यवस्था मह शास्त्र है तेरे लिए प्रमाण।
यही जान शास्त्र विधि नियत कर्म करने जोग सुजान।। दोहा।।
इति षोडश अध्याय दैवासुर सम्पद्विभागयोग *

India's Security Approach

The Guardian's allegations are biased, but Rajnath Singh's statement shows a change in India's security approach

Maj Gen (Dr) Ashok Kumar (Veteran)

India, like any respectable member of the community of nations, has the right and authority to pursue its enemies wherever they reside. However, to connect The Guardian's report with Rajnath Singh's comment is erroneous

The Guardian's allegations are biased, but Rajnath Singh's statement shows a change in India's security approach

Certain comments by Rajnath Singh, the Indian defence minister, in an interview with News18 have been taken out of context and abstracted out to make it seem that the defence minister was acknowledging the allegations made by 'The Guardian', something that was then again used by the British news outlet to buttress its version of the story. Image courtesy: Firstpost

An article in the British news outlet The Guardian, titled "Indian government ordered killings in Pakistan, intelligence officials claim", published on April 4, 2024, on the alleged extraterritorial operations by Indian intelligence against dreaded terrorists and their handler agents inside Pakistan has created waves within the Indian and international strategic communities.

Not with standing multiple gaffes such as publishing incorrect photographs of alleged terrorists (later changed without disclaimer) or not following basic journalistic ethics such as corroboration of information received from dubious sources, the article seems to have been written to make certain tenuous connections between allegations of similar killings in other countries as well as paint the Indian state as one that willingly flouts international norms.

Certain comments by Rajnath Singh, the defence minister, in a subsequent interview with News18, have been taken out of context and abstracted out to make it seem that the defence minister was acknowledging the allegations made by The Guardian — something that was again used by the British news outlet to buttress its version of the story.

The string of new stories emanating from The Guardian makes it look like a very lazy attempt to make the case for an Indian intelligence commonality between what is alleged to have happened in Canada and the US and create an image of an out-of-place India that has forgotten its stature as a member of the Global South.

Listening to the defence minister's conversation in detail and putting the comments in the historical context of India's fight with sponsored terror from Pakistan paints a clear yet nuanced picture of the country's changed calculus of response to terror incidents within its sovereign space.

For a very long time, students of international relations and security studies have classified the India-Pakistan dyad as one demonstrating a classic case of the stability-instability paradox. This means that in a pair of two nuclear-armed adversaries, the stability engendered at the strategic and political level can be used to create instability at the lower or tactical level. Though the tenets of this paradox did not hold at the first instance of an armed confrontation between the armies of the two states in Kargil in 1999, Pakistan felt bold enough to carry out terror strikes with impunity inside India for close to two decades, secure in the fact that India will not take any reciprocal military action against the terror nests and havens inside Pakistan since a strike inside Pakistan's territory may raise the stakes for a nuclear exchange in the subcontinent.

Before going further, one needs to highlight a peculiar fact about Pakistan, one that has been harped upon on multiple platforms but needs to be restated to put this entire episode in perspective: Pakistan is a state sponsor of terrorism.

Nowhere in the entire world can you point to a country that has opened schools for indoctrinating, radicalising, and training terrorists; where a country's armed forces and terrorists have open access to each other's facilities and personnel; and whose trained terrorists have been responsible for killings as far wide as Europe, Africa, the

US, and West Asia, apart from making the entire South Asia a killing ground.

Moving forward, Pakistan's much-vaunted sovereignty was turning out to be a joke. A significant chunk of land in the country's west was parcelled out to a motley group of jihadis and Islamist militants, and its forces struck 'peace deals' with the likes of Al Qaeda and the TTP. The US drone attacks against militant hideouts within Pakistan became a matter of routine, and as the Raymond Davis affair showed, its so-called sovereignty and the attendant safety of its people were up for sale. It is in this context — Pakistan as a badland of terror infestation — that India's future actions need to be seen.

India's red line was the attack on a camp of Indian Army soldiers in Uri on September 18, 2016. It was decided to conduct a coordinated surgical strike against identified and verified terror launch pads in Pakistan-occupied Kashmir. Even in retaliation, India was conducting strikes within its own sovereign territory illegally occupied by Pakistan, and in that, only verified terrorist hideouts.

However, an egregious act of violence committed by Pakistan-trained and sponsored terrorists led to the death of 40 central police forces soldiers in Pulwama on February 14, 2019. This prompted the government to launch Operation Bandar on February 26, 2019, under which Indian Air Force planes bombed the hideouts of Jaish-e-Mohammad in Balakot.

This time the hideouts were inside Pakistan; however, as explained earlier, Pakistan, as a state sponsor of terror, has these camps scattered across the length and breadth of the country. So any strike against terrorists will inevitably violate the formal sovereignty of the state.

This, however, is the crux of the argument. A state cannot hide behind formal notions of territorial integrity and sovereignty when it does not respect the same for others.

The defence minister, when replying to the anchor's questions regarding the allegations in The Guardian paper, said that India as a country has never coveted its neighbour's land and has always worked towards peaceful relations with them. However, if any country feels that it can send terrorists across the border, kill Indian citizens in cold blood, and then slink away back into Pakistan, then India will ensure that they are destroyed within Pakistan.

This statement was from the defence minister of a resolute and resilient country that has finally said enough is enough to the terror emanating from its immediate neighbourhood. India, like any respectable member of the community of nations, has the right and authority to pursue its enemies wherever they reside. However, to connect The Guardian's report with Rajnath Singh's comment is erroneous.

INDIA- CHINA BILATERAL RELATIONS

Political Relations

On 1 April, 1950, India became the first non-socialist bloc country to establish diplomatic relations with the People's Republic of China. Prime Minister Nehru visited China in October 1954. While, the India-China border conflict in 1962 was a serious setback to ties, Prime Minister Rajiv Gandhi's landmark visit in 1988 began a phase of improvement in bilateral relations. In 1993, the signing of an Agreement on the Maintenance of Peace and Tranquility along the Line of Actual Control (LAC) on the India-China Border Areas during Prime Minister Narasimha Rao's visit reflected the growing stability and substance in bilateral ties.

Visits of Heads of States/Heads of Governments

Cumulative outcomes of the recent high level visits have been transformational for our ties. During Prime Minister Atal Bihari Vajpayee's visit in 2003, India and China signed a Declaration on Principles for Relations and Comprehensive Cooperation and also mutually decided to appoint Special Representatives (SRs) to explore the framework of a boundary settlement from the political perspective. During the April 2005 visit of Premier Wen Jiabao, the two sides established a Strategic and Cooperative Partnership for Peace and Prosperity, while the signing of an agreement on Political Parameters and Guiding Principles, signaled the successful conclusion of the first phase of SR Talks.

During the State Visit of Chinese President Mr. Xi Jinping to India from 17 to 19 September 2014, a total of 16 agreements were signed in various sectors including, commerce & trade, railways, space - cooperation, pharmaceuticals, audio-visual coproduction, culture, establishment of industrial parks, sister-city arrangements etc. The two sides also signed a MoU to open an additional route for Kailash Mansarovar Yatra through Nathu La. The Chinese side agreed to establish two Chinese Industrial Parks in India and expressed their intention to enhance Chinese investment in India.

Prime Minister Narendra Modi visited China from May 14-16, 2015. Besides meeting with the Chinese leadership, Prime Minister Modi and Premier Li also addressed the opening session of the First State/ Provincial Leaders' Forum in Beijing. There were 24 agreements signed on the government -to-government side, 26 MoUs on the businessto-business side and two joint statements, including one on climate change. Prime Minister also announced the extension of the e-visa facility to Chinese nationals wishing to travel to India.

The momentum of meetings at the leadership level continued in 2016 too. President Pranab Mukherjee made a state visit to China from May 24 to 27, 2016. He visited Guangdong and Beijing where he met with the Chinese leadership. President also delivered a keynote address at the Peking University and attended a Round Table between Vice Chancellors and Heads of institutions of higher learning of the two countries. Ten MoUs providing for enhanced faculty and student exchanges as well as collaboration in research and innovation were concluded between the higher education institutions of the two countries. Prime Minister Narendra Modi visited China in

September 2016 to participate in the G20 Summit in Hangzhou and September 2017 to participate in the BRICS Summit in Xiamen, where he also held bilateral talks with President Xi Jinping. President Xi Jinping visited India in October 2016 to participate in the BRICS Summit in Goa. The two leaders also met along the sidelines of the SCO Heads of States Summit in Tashkent in June 2016 and in Astana in June 2017.

Other high level visits and mechanisms:

India and China have established more than thirty dialogue mechanisms at various levels, covering bilateral political, economic, consular issues as well as dialogues on international and regional issues. The Foreign Ministers have been meeting regularly. Chinese Foreign Minister Wang Yi travelled to India from 12-14 August, 2016 during which he met with EAM and called on Prime Minister. The mechanism of Special Representatives on the Boundary Question was established in 2003. The 19th round of talks between Shri Ajit Doval, National Security Advisor and Mr. Yang Jiechi, State Councillor was held in Beijing in April, 2016. State Councillor Yang Jiechi also visited India in November 2016 where he met with NSA for informal strategic consultations. The 1st reconstituted Strategic Dialogue between Foreign Secretary, Mr. S Jaishankar and the Chinese Executive Vice Foreign Minister Mr. Zhang Yesui was held in February 2017. India and China have also established a High Level Dialogue Mechanism on Counter Terrorism and Security, led by Mr. R.N. Ravi, Chairman (JIC) and Mr. Wang Yongqing, Secretary General of the Central Political and Legal Affairs Commission of China. The first meeting of the mechanism was held in Beijing in September 2016. To facilitate high level exchanges of Party leaders from China and State Chief Ministers from India, a special arrangement has been entered into by the International Liaison Department of the Central Committee of the Communist Party of China and the Ministry of External Affairs (MEA-IDCPC) since 2004. There are regular Party-to-Party exchanges between the Communist Party of China and political parties in India. In order to facilitate exchanges between Indian states and Chinese provinces, the two sides have also established a States/Provincial Leaders Forum.

Commercial and Economic Relations

The Trade and Economic Relationship between India and China has seen a rapid growth in the last few years. Trade volume between the two countries in the beginning of the century, year 2000, stood at US$ 3 billion. In 2008, bilateral trade reached US$ 51.8 billion with China replacing the United States as India's largest "Goods trading partner." In 2011 bilateral trade reached an all-time high of US$ 73.9 billion.

Current State of Play

According to recently released data by Chinese Customs, India-China trade in 2016 decreased by 0.67% year-on-year to US$ 71.18 billion. India's exports to China decreased by 12.29% year-on-year to US$ 11.748 billion while India's imports from China saw a year-on-year growth of 2.01% to US$ 59.428 billion. The Indian trade deficit with China further increased by 6.28% year-on-year to US$ 47.68 billion. In 2016, India was the 7th largest export destination for Chinese products, and the 27th largest exporter to China.

India-China trade in the first eight months of 2017 increased by 18.34% year-on-year to US$ 55.11 billion. India's exports to China increased by 40.69% year-on-year to US$ 10.60 billion while India's imports from China

saw a year-on-year growth of 14.02 % to US$ 44.50 billion. The Indian trade deficit with China further increased by 7.64% year-on-year to US$ 33.90 billion.

Composition of Bilateral Trade

In 2016, India's top exports to China included diamonds, cotton yarn, iron ore, copper and organic chemicals. Indian exports of diamonds grew 28.48% and amounted to US$ 2.47 billion. India was the second largest exporter of diamonds (worked/not worked) to China (with a share of 31.81%). India's cotton (including yarn and woven fabric) exports to China showed a decline of 44.1% to reach US$ 1.27 billion, although India was the second largest exporter of cotton to China with 16.43% market share.

In 2016, Indian exports of iron ore registered an increase of over 700% to reach US$ 844 million. In 2016, China exports of electrical machinery and equipment saw an increase of 26.83% to US$ 16.98 billion. India was the largest export destination of Fertilizers exports from China. China exported 23.48% of its total Fertilizers (worth US$ 1.54 billion) to India. India was the largest export destination for Chinese Antibiotics worth US$ 711 million in 2016, with a share of 23.55%. India was the second largest export destination for Chinese organic chemicals, worth US$ 5.68 billion in 2016.

Seven Indian Banks have a branch of representative office in China. Chinese bank, ICBC has one branch in India in Mumbai. According to data released by China's Ministry of Commerce, the Chinese investment in India in Jan-Mar 2017 were to the tune of US$ 73 million. Cumulative Investment in India till March 2017 stood at US$ 4.91 billion. The cumulative Indian investment in China till March 2017 reached US$ 705 million. More recently, in April 2017, e-business visa has been introduced to encourage more number of business people from China travelling to India.

The India-China Economic and Commercial Relations are shaped through various dialogue mechanism such as Joint Economic Group led by the Commerce Ministers of both sides, Strategic Economic Dialogues led by the Vice Chairman of NITI Ayog and the Chairman of National Development and Reform Commission of China, the NITI Ayog and the Development Research Center Dialogue and the Financial Dialogue led by Secretary Department of Economic Affairs of India and Vice Minister, Ministry of Finance of PRC.

Some of the other institutionalized dialogue mechanisms between the two countries include the Joint Working Group (JWG) on Trade, JWG on Collaboration in Skill Development and Vocational Education, Joint Working Group on Information and Communication Technology & High-Technology, Joint Study Group and Joint Task Force on Regional Trading Agreement (RTA), India-China Joint Working Group on Agriculture, India-China Joint Working Group on Cooperation in Energy and the Joint Study Group on BCIM Economic Corridor.

Cultural Relations

India-China cultural exchanges date back to many centuries and there is some evidence that conceptual and linguistic exchanges existed in 1500-1000 B.C. between the Shang-Zhou civilization and the ancient Vedic civilization. During first, second and third centuries A.D. several Buddhist pilgrims and scholars travelled to China on the historic "silk route". Kashyapa Matanga and Dharmaratna made the White Horse monastery at Luoyang their abode. Ancient Indian monk-scholars such as Kumarajiva, Bodhidharma and Dharmakshema contributed to the spread of Buddhism in

China. Similarly, Chinese pilgrims also undertook journeys to India, the most famous among them being Fa Xian and Xuan Zang.

As a mark of the historical civilizational contact between India and China, India constructed a Buddhist temple in Luoyang, Henan Province, inside the White Horse Temple complex which was said to have been built in honour of the Indian monks Kashyapa Matanga and Dharmaratna. The temple was inaugurated in May 2010 by President Pratibha Patil during her visit to China. Besides this, in February 2007, the Xuanzang memorial was inaugurated at Nalanda. In June 2008, joint stamps were released, one stamp depicting the Mahabodhi temple at Bodhgaya and the other depicting the White Horse temple at Luoyang. In order to further academic exchanges, a Centre for Indian studies was set up in Peking University in 2003. Chairs of Indian Studies/Hindi have also been established in Shenzhen University, Jinan University, Fudan University, Guangdong University and in Shanghai International Studies University.

Indian Bollywood movies were popular in China in the 1960s and 1970s and the popularity is being rekindled in recent times again. India and China have entered into an agreement on co-production of movies, the first of which based on the life of the monk Xuan Zang hit the theaters in 2016.

Yoga is becoming increasingly popular in China. China was one of the co-sponsors to the UN resolution designating June 21 as the International Day of Yoga. During the visit of Prime Minister Narendra Modi to China in May 2015, a Yoga-Taichi performance in the world heritage site of Temple of Heaven was witnessed by Premier Li Keqiang and the Prime Minister. During the same visit, an agreement was signed to establish a Yoga College in Kunming, Yunnan Province.

In recent events, on 20 June 2017, eve of International Day of Yoga, a successful Yoga@Great Wall event was organized at the Juyongguan section of the Great Wall. Minister of State for External Affairs Gen. (Dr) VK Singh (Retd) attended the event.

Colors of India Festival showcasing a unique blend of Indian performing arts, Bollywood movies and Indian photography was held from 15-26 May, 2017 at Beijing and Nanjing. The 2nd International Conference of Indologists-2016 was successfully held at Shenzhen from 11-13 November 2016. The Conference saw participation of more than 75 Indologists from world over including China, Germany, Thailand, Chile and India. An exhibition of Gupta Art at the Palace Museum in Beijing, titled "Across the Silk Road: Gupta Sculptures and their Chinese Counterparts, 400-700 CE" featuring 56 Indian sculptures was held in year 2016.

Education Relations

India and China signed Education Exchange Programme (EEP) in 2006, which is an umbrella agreement for educational cooperation between the two countries. Under this agreement, government scholarships are awarded to 25 students, by both sides, in recognized institutions of higher learning in each other’s country. The 25 scholarships awarded by India are offered by Indian Council for Cultural Relations (ICCR). During the visit of Prime Minister Sh. Narendra Modi to China, both the countries have signed fresh Education Exchange Programme (EEP) on May 15, 2015. The same provides for enhanced cooperation between institutions in the field of vocational education; collaboration between Institutes of higher learning, etc. 25 Chinese students

have been selected to join Hindi language course for the academic year 2017-18 under EEP scholarship awarded by ICCR.

Apart from this, Chinese students are also annually awarded scholarships to study Hindi at the Kendriya Hindi Sansthan, Agra to learn Hindi. For the year 2017-18, 5 Chinese students have been selected to study in Agra under this scheme.

The cooperation in the education sector between the two sides has resulted in an increase in the number of Indian students in China. During the Academic Year 2016-17 there were 18171 Indian students studying in various universities in China in various disciplines.

Shri Prakash Javadekar, Minister of Human Resource Development, attended BRICS Ministers of Education on 5th July, 2017 at Beijing, China. In his speech, he appreciated the creation of institutional mechanism in the form of BRICS Network University and BRICS Think Tank Council. BRICS Network University, where 12 universities from each of the 5 countries will engage with each other in education research and innovation, is another commendable initiative. Five areas of cooperation are prioritised which are Communication and IT, Economics, Climate Change, Water Resources and Pollution, and BRICS study. India will participate whole-heartedly in all these cooperative efforts.

The Embassy maintains regular communication with MoE in China as well as all universities where there are a sizeable number of Indian students. Further, Embassy officials also visit universities to not only establish direct contact with university authorities but also to interact with the Indian students. Students are encouraged to approach the Embassy in case they are faced with serious problems. For this purpose, the mobile number and email address of Minister (Education/Consular) and email address of Second Secretary (Education) is provided on the Embassy website. The Mission has also launched a social media account on Wechat for Indian students, with the objective to make it easy for them to reach out to the Embassy as well as to link them to other fellow Indian students studying in different cities of China.

Indian Community

The Indian community in China is growing. Present estimates put the community strength to around 35,500. A major part of this comprises of students (over 18000), who are pursuing courses in various universities in China. A number of Indians and PIOs are also working as professionals with various multinational and Indian companies.

(Courtesy open media)

Advertisement Rate : Sainya Sandesh Patrika

No.	Size	One Time Tariff	Annual Tariff Remarks
01	Seasonal Greetings	Rs. 800/=	
02	B/W half page	Rs. 8000/=	Rs 96,000/- (1x month complementary)
03	B/W Full page	Rs. 10,000/=	Rs 1,20,000/- (1x month complementary)
04	Colour Full page (inner page)	Rs. 14,000/=	Rs 1,68,000/- (1x month complementary)
05	Colour Full page (Rear page)	Rs. 16,000/=	Rs 1,92,000/- (1x month complementary)

Nari Shakti all set to take centre stage in armed forces

Maj Gen Harsha Kakkar (Veteran)

The recently concluded Republic Day parade showcased Nari Shakti as never before. Apart from a few marching contingents of the army and a BSF Camel contingent almost all others were women contingents. The armed forces medical corps including the Military Nursing Service participated for the first time in the parade. Most bands, less army, only showcased women musicians. The parade commenced with 100 women artists playing Indian musical instruments.

The motorcycle display was performed by women members of the Central Armed Police Forces for the first time. A total of 1,500 women dancers showcased 30 different folk dance styles. There is no doubt that the performance of women in every part of the parade was outstanding and praiseworthy. It showcased levels to which women have risen in different security agencies and services.

This is possibly the first time that any government has given such a level of emphasis to women in a major national event. This could not have been without a reason, especially as elections draw close.

The government had pushed the Nari Shakti Vandan Adhiniyam 2023 Bill through Parliament in Sept this year, which would reserve 33 per cent of seats for women in the Lok Sabha and Legislative Assemblies of all states. However, this may need to wait till 2029 as it would need an all-India census and constituency revamp before implementation. Currently, representation of women being allotted seats for elections remains low for all political parties.

Women voters have been effective in determining election results. In December, addressing his party workers, post victories in Madhya Pradesh, Rajasthan and Chhattisgarh, Prime Minister Narendra Modi stated, "I kept saying that for me, four castes are important – Nari Shakti, Yuva Shakti, Kisan and Gareeb Parivar."

Earlier in March, after winning elections in UP, Goa, Uttarakhand and Manipur the prime minister stated, "Women have played a crucial role in these elections across states. They have blessed us - we have won splendidly in areas where women voters have

dominated. Nari Shakti has been our partner in this victory." There were reports that the BJP had received maximum votes from women basically because its cooking gas subsidies and cheaper loans paid dividends at the polling booth.

The Maharashtra government launched the Nari Shakti Doot app this month aimed at empowering women. It was released by the prime minister. The West Bengal government of Mamata Banerjee is banking on support from women voters based on its women-centric schemes. A TMC leader mentioned in an interview that the chief minister wanted the party to take women-oriented schemes- Rupashree, Kanyashre), Laxmir Bhandar and Sabuj Sathi (free bicycles to school students) to every household.

The Congress has offered free bus service to women in states in which it is/ was in power, Rajasthan, Karnataka and now Telangana, despite financial hurdles, apart from financial doles. It has also increased health insurance limits for women to Rs10 lakh in Telangana. Delhi Chief Minister Arvind Kejriwal had already commenced free bus service for women. Kejriwal's attempt to make the Delhi Metro free for women was questioned and blocked by the Supreme Court.

In Madhya Pradesh, there is the Ladli Behna Yojana which offers Rs 1,250 per

month to women of poor and middle-income households as well as 35 per cent direct recruitment in government jobs. Prior to the last elections, the BJP promised a 33 per cent quota for women in government jobs in Mizoram. The BJP announced that in Karnataka it would conduct Nari Shakti Vandana or a women's convention at the district level before this year's Lok Sabha elections.

Understanding the government's push to garner women's support, the armed forces

cannot be far behind. The navy chief, Admiral R Hari Kumar stated in his pre-navy day press conference, "We're not inducting women separately. They're being inducted in the same manner as their male counterparts. We're looking at being a gender-neutral force where we only look at the capability of the individual."

The air chief, Air Chief Marshal VR Chaudhari, stated in his pre-Air Force Day conference "IAF has also transcended traditional boundaries by inducting women who undertake all tasks equally with their male counterparts. In doing so, the IAF has become the lead Service in promoting Naari Shakti in its true spirit." The army remains the only service which is moving slowly in opening all its branches but this too may change soon.

As the 2024 elections draw close, political parties would seek to target women voters much more than religion or caste. While men hesitate to vote or in some cases have migrated for work, women come out in large numbers to exercise their franchise. As India Today mentions, "Women, by themselves, have become a constituency in their own right." This will change political parties playing on religion and caste politics.

The basic reason why targeting women voters is the new norm is because of their increasing voter turnout. An assessment by The Hindu newspaper states that 'In Rajasthan, the voting percentage of women rose from 41 per cent in 1962 to 74 per cent in 2018. In Madhya Pradesh, it grew from 29 per cent to 78 per cent, while in united Andhra Pradesh, 59 per cent of women came out to vote in 1962, in Telangana alone in 2018, the figure was 73 per cent.' As per MoneyControl, 'women turnout (at 67.18 per cent) surpassed that of men (at 67.01 per cent) for the first time in the general elections of 2019.'

The State Bank of India Economic Research Department stated in a report in December last year, "Rising participation of women in India's political arena is one of the most significant stories of the last decade. Women voters are now playing a significantly bigger role in elections than ever before." This changing landscape cannot be ignored by governments.

Nari Shakti, on display in this year's Republic Day, apart from showcasing the rising power of women in India, was also a subtle message to voters that women are present in every government institution, including security forces, in sizeable numbers. As elections draw close, all political parties would begin offering additional sops to women to garner their support.

Considering the changing environment by 2029, when the Women's Reservation Bill would become effective, there would be added pressure to induct women into branches of the armed forces in which there are still reservations. The army will be compelled to change its policies and overcome its reservations.

Appendix
(Refer to CW Dte/CW-3 Note No
B/44607/AG/Misc/CW-3/Edn dated 21 Feb 2024)

Concession by Reputed Universities/Edn Institutes for UG/PG Courses

1. Manav Rachna University, Faridabad (Haryana).
(a) 25% concession in Tuition Fees for all courses.
(b) 10% reservation in all courses.
(c) 20 Seats Reserved in Bachelor of Dental Sciences (BDS).
(d) Priority in hostel accommodation.
(e) Contact. Tele : 0129-4198600(30 Lines), 0129-4198100 (30 Lines)
Email : info@mriirs.edu.in Website :www.mriirs.edu.in

2. (HP). Jaypee University of Information Technology, Waknaghat, Distt-Solan
(a) 10% reservation in all courses.
(b) 30% concession in tuition fees for wards of Serving and Retired personnel.
(c) 35% concession in tuition fee for wards of Veer Naris/Disabled Soldiers,
(d) Contact. Tele : 01792-257999 (30 Lines) Website : www.juit.ac.in

3. Raj Kumar Goel Institute of Technology, Delhi-Meerut Road, Ghaziabad (UP).
(a) 30% Concession in tuition fee for all courses for 1st Academic Year only.
(b) 10 Seats reserved in each course.
(c) Fee can be deposited in two installments.
(d) Contact. Tele : 1800120777755, 0120-2788273, 2784224 Email : deanse@rkgit.edu.in

4. University of Engineering & Management, Kolkata.
(a) Res of 02 seats in each course being run by the University.
(b) 50% freeship to all wards of Army Pers.
(c) 100% freeship to the wards of Army Pers get 90% and above marks in Higher Secondary.
(d) Contact. Tele : 033-23572059 (Admissions), FAX: 033-23578302
Email : vc@uem.edu.in Website : www.uem.edu.in

5. Parul University, Vadodara (Gujarat).
(a) Offer for Army Pers. Waiver of 40% tuition fee for Gallantry Awardees and 30% tuition fee for Serving/Retd Army Pers.
(b) Offer for Wards/Dependents of Army Pers. Waiver of 50% tuition fee for the wards of battle/physical casualties (Attributable to Mil Service), 40% for Gallantry Awardees and 30% for wards of Serving/Retd pers.
(c) Contact. Tele No : 02668-260300/307 Fax : 02668-260201
E-mail : info@paruluniversity.ac.in Website : www.paruluniversity.ac.in

6. FLAME University, Pune.
(a) Concession in fees/other charges to the extent of 100% (Freeship) for up to 10 wards of Army personnel killed/disabled in action.
(b) Concession in fees and other charges to the extent of 75% to 10 wards of serving Army personnel.
(c) Concession in fees and other charges to the extent of 50% to 10 wards of Retd Army personnel.
(d) Being a fully residential campus University, hostel accommodation will be part of the above arrangement.
(e) Other concessions shall include preferential allocation of various research, innovation and entrepreneurship related assignments.
(f) Contact : Tele No : 020-67906206 Mob No : 09823852818 (Registrar)

गतिविधियां(Social Activities)

– संकलन जे.बी.एस.चौहान

लखनऊ (उ.प्र.)

29 मार्च 2024 को लखनऊ महानगर (पूर्व भाग) की मासिक बैठक और होली मिलन कार्यक्रम श्रीमान अम्बा दत्त जोशी जी के आवास, कल्याणपुर लखनऊ में शाम 5 बजे आयोजित हुआ। सभी ने एक दूसरे को होली की शुभकामनाऐ दी।

पूरे लखनऊ महानगर का होली मिलन कार्यक्रम 06 अप्रैल को ब्रंदाबन कालोनी में मेजर बीएस तोमर, अवध प्रांत अध्यक्ष के करणी माता सिक्योरिटीज के परिसर में आयोजित किया गया जिसमें लखनऊ में रहने वाले राष्ट्रीय, प्रादेशिक, अवध प्रान्त एवं लखनऊ महानगर के पदाधिकारियों एवं सदस्य सम्मिलित हुए और एक दूसरे को होली की बधाई दी। कुछ सामयिक मामलों पर चर्चा के उपरांत बैठक संपन्न हुई।

कानपुर उत्तर प्रदेश

अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद् कानपुर ने दिनांक 07 अप्रैल 2024 समय सुबह् 10 बजे से अपराह्न 4 बजे तक विश्वकर्मा मंदिर परिसर, विश्वकर्मा नगर, सनिंगवा रोड मे होली मिलन एवं कवि सम्मेलन समारोह का भव्य समारोह आयोजित हुआ ! समारोह में परिषद् के पूर्व राष्ट्रीय मंत्री श्रीं प्रहलाद सिंह, प्रांतीय अध्यक्ष ले. कर्नल बृज पाल सिंह राठौर, अवध प्रांत के अध्यक्ष और कानपुर प्रांत के संगठन मंत्री मेजर वीरेंद्र सिंह तोमर, आदि उपस्थित रहे। इसके अलावा स्थानीय पूर्व सैनिकोंध्सैन्य् मातृ शक्ति की संख्या लगभग 350 थी। राष्ट्रीय कवियों में सर्व श्री सूरेश गुप्त राजहंस, सुरेंद्र गुप्त सीकर, धीर पाल सिंह धीर, अजीत सिंह राठौर लुल्लपुरी कानपुरी, राम नरेश चौहान, सुरेश साहनी, विकास शुक्ला अक्षय व्योम, श्रीमती राधा शाक्य, श्रीमती गीता द्विवेदी, श्रीमती मोहिल, श्रीमती ज्योति तिवारी और वेटरन भोला नाथ पांडेय आदि की गरिमा पूर्ण उपस्थिति रही ।

नगरोटा (जम्मू कश्मीर)

अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद जम्मू की बैठक 02 अप्रैल 2024 को नगरोटा में बैठक का आयोजन किया गया। कैप्टन बंसीलाल ने उपाध्यक्ष कर्नल वीएस मंगोत्रा सहित सभी पदाधिकारियों का स्वागत किया। मेजर सीएल गुप्ता की देखरेख में नगरोटा तहसील इकाई का गठन किया गया। आतंकियों के सफाये में भूमिका निभाने वाले हव. शामलाल, सेना मेडल को सम्मानित किया गया। समापन राष्ट्र गान के साथ हुआ।

जयपुर (राजस्थान)

अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद राजस्थान की प्रदेश बैठक 6 अप्रैल 2024 को प्रदेश कार्यालय के समीप स्थित किसान भवन में आयोजित की गई। बैठक में कुल 69 सदस्य उपस्थित थे। बैठक की अध्यक्षता जनरल अनुज माथुर, प्रदेश अध्यक्ष ने की तथा बैठक श्रीवर्धन जी, पालक अधिकारी के मार्गदर्शन में संपन्न हुई। इस विशेष बैठक में सदस्यों द्वारा प्रेषित किए गए विभिन्न एजेंडा बिंदुओं का प्रदेश अध्यक्ष ने सोहार्दपूर्ण वातावरण में निस्तारण किया। प्रदेश अध्यक्ष ने OROP II की विसंगतियों के संकलन के लिए एक समिति के गठन के आदेश दिए और समिति को 20 अप्रैल तक अपनी रिपोर्ट प्रदेश कार्यालय को प्रेषित करने के लिए निर्देशित किया। पालक अधिकारी जी ने संगठन में एकजुटता एवं सौहार्दता किस तरह से बढ़ाई जाए, पर काफी रोचक उद्बोधन दिया।

देवरिया (उत्तर प्रदेश)

अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद देवरिया की जिला इकाई की बैठक कर्नल अरुण प्रकाश पांडेय जी के आवास पर आयोजित किया गया। जिसमे विभिन्न मुद्दों पर चर्चा किया गया। देवरिया में संगठन के कार्यालय खोलने की व्यवस्था पर चर्चा किया गया। आगामी लोक सभा चुनाव के बारे में भी विचार किया गया। सैनिक बंधुओ से अधिक से अधिक संख्या में चुनाव में प्रतिभाग करने को कहा गया। बैठक को प्रतिमाह आयोजित करने का संकल्प

लिया गया। संगठन की सदस्यता बढ़ाने की अपील की गई। बैठक प्रमुख रूप से कर्नल अरुण प्रकाश पांडेय जिला अध्यक्ष, प्रभाकर मणि त्रिपाठी, जिला महासचिव, सूबेदार मेजर व्यास मिश्र , संगठन कोषाध्यक्ष, कैप्टेन जय राम बैठा संगठन उपाध्यक्ष, सूबेदार मार्कंडेय पति तिवारी नगर अध्यक्ष देवरिया सह सचिव देवरिया, डॉक्टर दिनेश मिश्र, मीडिया प्रभारी, डॉक्टर दिवाकर त्रिपाठी संगठन सचिव, सूबेदार मेजर बसंत प्रसाद, सूबेदार मेजर दिनेश दीक्षित, कैप्टेन सुभाष चन्द्र सिंह, हवलदार संतोष मणि त्रिपाठी, कैप्टेन एसएन गुप्ता, हवलदार अभिनव तिवारी आदि उपस्थित रहे।

कोटद्वार (उत्तराखंड)

अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद कोटद्वार उतराखंड ने आजाद हिन्द फौज का कार्यक्रम धूमधाम से मनाया।

अयोध्या (उत्तर प्रदेश)

दिनांक 10.4.2024 को सायंकाल 5रू00 बजे मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम के मंदिर परिसर के बगल में बन रहे विश्राम स्थल में श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के महासचिव श्रीमान चंपत राय जी श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के सदस्य और श्री राम जन्मभूमि मर्यादा पुरुषोत्तम राम की प्राण प्रतिष्ठा के मुख्य यजमान रहे श्रीमान डॉ अनिल मिश्रा जी के सानिध्य में अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद के सदस्यों और अनेक भूतपूर्व सैनिकों तथा पदाधिकारियों ने श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट में सेवा समायोजन के संदर्भ में एक वृहद बैठक का आयोजन किया। जिसमें श्रीमान चंपत राय जी ने अपने उद्‌बोधन में सैनिकों की प्रशंसा की और अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद के सभी भूतपूर्व सैनिकों को आपके द्वारा आश्वासन मिला की सबको रुचि के अनुसार श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र में उचित अवसर कार्य करने का दिया जाएगा और उसके बदले में सेवा भाव के साथ–साथ जो उचित है वह पारिश्रमिक भी दिया जाएगा ।

यह सब कुछ संभव हो पाया है अयोध्या टीम के अथक प्रयासों के कारण। सूबेदार श्री प्रकाश पाठक एवं उनकी टीम बधाई की पात्र है।

गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)

मोइरांग दिवस के अवशर पर जिला गोरखपुर में पैडलेगँज चौराहा पर नेता जी सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धासुमन अर्पित किया गया ।

इस कार्यक्रम में मेजर जनरल शिव जसवल, ए वी एस एम, ब्रिगेडियर गोबिन्द जी मिश्र वी एस एम, पी पी एम, ब्रिगेडियर कृष्ण प्रताप बहादुर सिंह, कर्नल रामाश्रय मिश्र, विंग कमाण्डर पी डी शुक्ल, कैप्टन भास्कर पांडेय ,कैप्टन ओम प्रकाश, सूबेदार मेजर एन एन तिवारी, एच एफ ओ त्रिपाठी, एम पी ओ शशिभूषण शर्मा व बड़ी संख्या में संगठन के सदस्य उपस्थित थे।

ब्रिगेडियर गोबिन्द जी मिश्र जिनके नेतृत्व में 2015 में मोइरँग यात्रा आयोजित की गई थी , मोइरँग यात्रा के महत्व और अपने खुशनुमा अनुभव की विस्तृत जानकारी दी। गोरक्ष प्रांत के देवरिया और कुशीनगर जनपदों में भी मोइरांग दिवस मनाया गया।

ग्वालियर (मध्यप्रदेश)

अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद की ग्वालियर इकाई ने कुटुम्ब प्रबोधन कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में शहर के पूर्व सैनिक एवम उनके परिजनों ने हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम में मातृ शक्ति के रूप में श्रीमति रितु नामधारी ने कुटुम्ब परंपरा की उपयोगिता, एवम श्रीमति कल्पना शुक्ला ने अपने संबोधन में परिवार के सदस्यों के आपसी संवाद की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। इसके बाद सभी को माननीय श्री अरुण पांडे जी सह संघ चालक ग्वालियर का सानिध्य प्राप्त हुआ। इस कार्यक्रम का संचालन पूर्व सैनिक सार्जेंट जितेंद्र कुमार शर्मा एवम वारंट ऑफिसर शशि कांत चतुर्वेदी अधिवक्ता ने किया। इस कार्यक्रम में कर्नल श्रीमन नारायण,सूबेदार प्रह्लाद सिंह भदौरिया, बृज राज तोमर आदि मौजूद रहे।

कार्यक्रम का समापन राष्ट्र गीत गा कर हुआ।